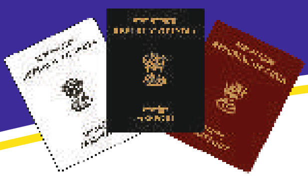

पांचाल

राजभाषा पत्रिका

द्वितीय अंक - 2022

संरक्षक
श्री मोहम्मद नसीम
क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी

❋❋❋❋❋

संपादक
श्री दिनेश सिंह
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

❋❋❋❋❋

विशेष सहयोग

श्री अतुल कुमार सक्सेना
वरिष्ठ अधीक्षक

श्री धर्मवीर सिंह
वरिष्ठ अधीक्षक

श्री कौशल सिंह
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

श्री मो० आतिर अंसारी
कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक

❋❋❋❋❋

भारत सरकार
विदेश मंत्रालय

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली

बी.डी.ए. कॉम्पलैक्स, पुराना पीलीभीत रोड, प्रियदर्शनी नगर, बरेली - 243122

वी. मुरलीधरन
V. Muraleedharan

सत्यमेव जयते
भारत सरकार

विदेश राज्य मंत्री एवं
संसदीय कार्य राज्य मंत्री
Minister of State for External Affairs &
Minister of State for Parliamentary Affairs
Government of India

संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में अपने सफल प्रयासों को आगे बढ़ाते हुए राजभाषा पत्रिका 'पांचाल' के द्वितीय अंक (वर्ष 2021-22) का प्रकाशन करने जा रहा है।

इस अवसर पर मैं क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, बरेली के उन सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूं जो हिंदी के विकास में अपना निरंतर योगदान दे रहे हैं। मेरा विश्वास है कि इस पत्रिका के प्रकाशन से पासपोर्ट कार्यालय बरेली में राजभाषा के प्रति रुचि में संचार होगा तथा पाठकों को पासपोर्ट, हिंदी व अन्य विषयों पर नवीनतम जानकारी प्राप्त होगी जिससे राजभाषा का प्रसार होगा।

पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी कर्मियों को इसके सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(वी. मुरलीधरन)
विदेश राज्य मंत्री

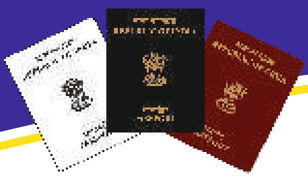

Sanjay Bhattacharyya
Secretary (CPV & OIA)
Tel. 49018134
Fax: 49018135
Email: secycpv@mea.gov.in

सत्यमेव जयते

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS
NEW DELHI
2013, 'C' Wing, Jawaharlal Nehru Bhawan
New Delhi - 110011

संदेश

मुझे यह जानकार हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि **पासपोर्ट कार्यालय, बरेली** द्वारा अपनी राजभाषा पत्रिका 'पांचाल' के दूसरे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

हिन्दी में कामकाज की दिशा में हमारी जागरूकता तथा कार्य निपुणता को बढ़ाने में हिन्दी की गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन महत्वपूर्ण है। हिन्दी गृह पत्रिका 'पांचाल' का निरंतर प्रकाशन राजभाषा के प्रचार–प्रसार के क्षेत्र में कार्यालय के रचनात्मक योगदान को दर्शाता है।

इस पत्रिका के द्वितीय अंक के प्रकाशन के लिए कार्यालय के सभी कर्मियों सहित इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकारों को मेरी ओर से हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं ।

संजय भट्टाचार्य

(संजय भट्टाचार्य)

सचिव (सी.पी.वी. एवं ओ.आई.ए.)

दिनांक: 05 जनवरी 2022

नई दिल्ली

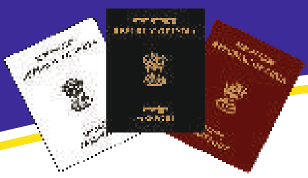

टी. आर्मस्ट्रांग चांगसन
संयुक्त सचिव (पासपोर्ट सेवा कार्यक्रम)
और मुख्य पासपोर्ट अधिकारी

सत्यमेव जयते

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली
MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS
NEW DELHI

संदेश

यह प्रसन्नता की बात है कि पासपोर्ट कार्यालय, बरेली द्वारा अपनी राजभाषा पत्रिका '**पांचाल**' के दूसरे अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

गृह पत्रिका का निरंतर प्रकाशन राजभाषा के प्रचार–प्रसार के क्षेत्र में कार्यालय द्वारा किए जा रहे सार्थक प्रयासों का प्रतीक है जिसके फलस्वरूप कार्यालय को वर्ष 2021 के दौरान उत्कृष्ट **पत्रिका प्रकाशन** के लिए प्रथम छमाही हेतु **नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बरेली** द्वारा **प्रशंसा पत्र** से सम्मानित किया गया है तथा **राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में सर्वोत्कृष्ट कार्य निष्पादन** के लिए निरंतर दूसरी छमाही में **तृतीय पुरस्कार** से सम्मानित किया गया है। राजभाषा के क्षेत्र में इस उल्लेखनीय कार्य के लिए पासपोर्ट कार्यालय, बरेली के समस्त अधिकारी और कर्मचारी विशेष प्रशंसा के पात्र हैं।

मैं राजभाषा पत्रिका 'पांचाल' के सफल प्रकाशन में योगदान देने वाले संपादक मण्डल एवं रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि यह पत्रिका इसी प्रकार अनवरत प्रकाशित होती रहेगी।

(टी. आर्मस्ट्रांग चांगसन)

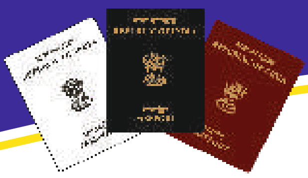

जयंत डिड्डी, भा.रा.से.
मुख्य आयकर आयुक्त,
बरेली

सत्यमेव जयते

मुख्य आयकर आयुक्त
Chief Commissioner of Income Tax
आयकर भवन, कमला नेहरू मार्ग
Aaykar Bhavan, Kamla Nehru Marg
सिविल लाइंस, बरेली - 243001
Civil Lines, Bareilly - 243001

शुभकामना संदेश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि पासपोर्ट कार्यालय, बरेली, राजभाषा पत्रिका ''पांचाल'' के द्वितीय अंक का प्रकाशन करने जा रहा है ।

शासकीय कार्यों में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए इस प्रकार की पत्रिका का प्रकाशन एक सार्थक प्रयास है। मुझे आशा है कि ''पांचाल'' का यह अंक राजभाषा नीति के प्रचार एवं प्रसार में सक्रिय भूमिका निभाएगा और इसके प्रकाशन से विभागीय अधिकारियों और कर्मचारियों की साहित्यिक व रचनात्मक प्रतिभा का विकास होगा ।

साथ ही अधिकारियों एवं कर्मचारियों के पारिवारिक सदस्यों, जो कि इसमें प्रकाशन के लिए अपनी रचनाएँ बढ़ चढ़कर भेजते हैं, को भी अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम प्राप्त होगा।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित होने वाली रचनाएँ ज्ञानवर्धक, रोचक एवं मनोरंजक होगीं तथा पाठकों को हिंदी के पठन-पाठन के लिए प्रेरित करेगी ।

मैं ''पांचाल'' के सभी रचनाकारों, संपादक मण्डल और इस पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी सहयोगदाताओं को बधाई देता हूँ और इसके निरंतर प्रकाशन के लिए अनंत शुभकामनाएँ देता हूँ ।

जय हिंद ।

जयंत डिड्डी

(जयंत डिड्डी)
अध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
बरेली

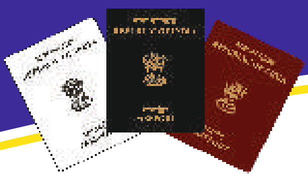

संरक्षक की क़लम से.....

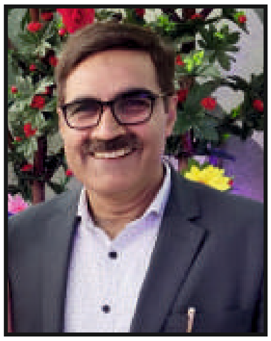

मोहम्मद नसीम
क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी

'पांचाल' के द्वितीय अंक को अपने सम्मानीय पाठकों के हाथों में सौंपते हुए मुझे अत्यंत हर्ष और गौरव की अनुभूति हो रही है। पिछले वर्ष की भांति इस बार भी कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों व उनके परिवार के सदस्यों ने अपने सशक्त विचारों और मनोभाव को कलम बंद करते हुए अपनी रचनाओं कविता, कहानी, मनोरंजक व ज्ञानवर्धक लेखों से पूर्व की भांति द्वितीय अंक को भी सजाया है जिसके लिए सभी बधाई के पात्र हैं । मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पांचाल का यह अंक भी राजभाषा के प्रचार प्रसार व हिंदी के अधिक प्रयोग के लिए जन-जन को प्रोत्साहित करने के मूल उद्देश्य में पुन: सफलता प्राप्त करेगा।

पिछले वर्ष पासपोर्ट कार्यालय, बरेली ने पहली बार राजभाषा पत्रिका 'पांचाल' के प्रथम अंक का प्रकाशन किया, जिसमें कार्यालय के सभी अधिकारियों/ कर्मचारियों एवं उनके परिवार के सदस्यों व पूर्व सहयोगियों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया और अपने भावों की अभिव्यक्ति के माध्यम से अपनी रचनाओं द्वारा इसके सफल आयोजन में अपना योगदान दिया। इसका परिणाम यह रहा कि हमारी पत्रिका के प्रथम अंक को ही नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति बरेली द्वारा नगर के 55 कार्यालयों में **उत्कृष्ट पत्रिका** का पुरस्कार प्रदान किया गया। पाठकों ने पत्रिका के नाम पांचाल को भी बहुत पसंद किया, इसके नामकरण के समय बरेली के पौराणिक महत्व को ध्यान में रखा गया। उद्देश्य यह था कि पत्रिका पढ़कर लोगों में 'पांचाल' के बारे में उत्सुकता जगे, लोग पांचाल को जानना चाहे, पाठकों को एक नया पर्यटन स्थल मिले और इस तरह बरेली में पर्यटन भी विकसित हो । यह जानकर सुखद अनुभूति हुई कि हमारी पत्रिका को पढ़कर कई लोगों ने पांचाल से सम्बंधित ऐतिहासिक महत्व वाले स्थल 'अहिच्छत्र' का भ्रमण किया तथा वापस आकर अपने अनुभव भी हमें साझा किए।

'भाषा' भावों की अभिव्यक्ति का सबसे सशक्त माध्यम होती है। जिस तरह मानव विकास के लिए स्वतंत्रता ज़रूरी है उसी प्रकार भाषा की स्वतंत्रता उसकी समृद्धि के लिए शर्त है, भाषा एक अविरल झरने या नदी की तरह है, जिसकी धारा एक ही मार्ग से प्रवाहित नहीं होती है, वरन उसकी प्रकृति बिना किसी अवरोध के बहना है, अत: जीवित भाषा को सीमाओं, बंधनों से मुक्त होना चाहिए। जिस भाषा में जितनी मिलावट होगी वह उतनी ही समृद्ध व प्राणवान होगी। वास्तव में, हिन्दी जीवन्त भाषा है। वह समय के साथ बही है, कहीं ठहरी नहीं। जीवंत भाषाएं शब्दों की छुआछूत नहीं मानती हैं। मेरा व्यक्तिगत विचार है कि हिंदी भाषा के विकास में कुछ लोगों का संकीर्ण नजरिया एक बाधा है जिसके तहत भाषा के तत्सम कठिन शब्दावली के प्रति अतिवाद के कारण हिंदी में अन्य भाषाओं फारसी, अरबी, तुर्की, अंग्रेजी आदि के शब्दों से परहेज किया जाता है उदाहरण के लिए लूट, डकैती, धोती और पंडित जैसे भारतीय शब्दों को अंग्रेजो ने अपनी भाषा में शामिल कर लिया किन्तु हिंदी भाषा के शुद्धतावादी लोगों को आम बोलचाल के शब्द जैसे कंप्यूटर,अस्पताल, स्कूल, इंजन, लालटेन आदि को भी हिंदी भाषा में प्रयोग करने में संकोच है। हिन्दी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के लिए भारतीय संविधान को अनुच्छेद 351 में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि हिन्दी के विकास के लिए उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना आठवीं अनुसूची की अन्य भाषाओं के प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात किया जा सकता है। हिन्दी का शब्द भण्डार बढ़ाने के लिए मुख्यतया संस्कृत और गौणतया अन्य भाषाओं के शब्द ग्रहण करना चाहिए। हिन्दी और भारतीय भाषाएं हमारा स्वाभिमान हैं।

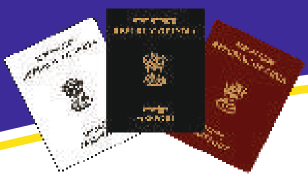

पासपोर्ट कार्यालय, बरेली में राजभाषा के प्रसार में उत्तरोत्तर वृद्धि दर्ज की जा रही है। हमारे कार्यालय में लगभग शत–प्रतिशत कार्य हिंदी में किया जा रहा है एवं राजभाषा के सभी प्रावधानों के अनुपालन को सुनिश्चित किया जा रहा है। इसके फलस्वरूप नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बरेली द्वारा लगातार दूसरी छमाही में कार्यालय को राजभाषा में अच्छा कार्य करने के लिए पुरस्कृत किया गया तथा कार्यालय ने इस बार नगर में तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त विदेश मंत्रालय द्वारा विश्व हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर दिनांक 10 जनवरी 2022 को राजभाषा में अच्छा कार्य करने के लिए पासपोर्ट कार्यालय बरेली को ''क'' क्षेत्र के पासपोर्ट कार्यालयों में **प्रथम** पुरस्कार प्रदान किया गया।

किसी भी क्षेत्र में एक स्तर पा लेना जितना कठिन होता है उससे कठिन उस स्तर को बनाए रखना और उससे आगे बढ़ना होता है अत: अब हमारे सामने एक और जिम्मेदारी है कि हम कार्यालय को राजभाषा के क्षेत्र में इस स्तर से ऊपर ले जाए और इसके लिए हम सतत प्रयास रत भी हैं। मैं पत्रिका के इस अंक को सजाने वाले समस्त रचनाकारों व प्रकाशन से जुड़े सभी सहयोगियों को इसके सफल प्रकाशन की शुभकामनाएं एवं बधाइयां देता हूँ। मुझे आशा है यह अंक, प्रथम अंक से बेहतर होगा और हम पाठकों को ज्ञानवर्धक और रुचिकर साहित्य का समागम प्रस्तुत कर पाएंगे। अपने सम्मानित पाठकों से आशा करता हूं कि पत्रिका के इस अंक पर हमें अपने विचारों व सुझावों से प्रोत्साहित करेंगे जो भविष्य में पत्रिका को अत्याधिक रोचक व ज्ञानवर्धक बनाने में सहायक सिद्ध होंगे।

शुभकामनाओं सहित।

(मोहम्मद नसीम)
क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी,
बरेली

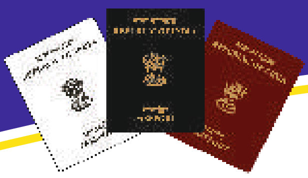

संपादकीय

दिनेश सिंह
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

पासपोर्ट कार्यालय बरेली की राजभाषा पत्रिका ''पांचाल'' के प्रथम अंक के सफल प्रकाशन के बाद द्वितीय अंक आप सभी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत हर्ष एवं गौरव की अनुभूति हो रही है।

पांचाल के प्रथम अंक को आप सभी ने जो प्रेम और स्नेह दिया है उसने हमें द्वितीय अंक को और बेहतर करने की प्रेरणा दी है। प्रथम अंक के संबंध में विभिन्न कार्यालयों ने अपनी उत्साहवर्धक टिप्पणियां प्रेषित की है उन सभी को सादर धन्यवाद ज्ञापित करते हुए अत्यंत हर्ष के साथ यह भी सूचित करना है कि आप सभी की शुभकामनाओं का ही असर है कि पासपोर्ट कार्यालय बरेली की राजभाषा पत्रिका पांचाल के प्रथम अंक को बरेली नगर की नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा बरेली में स्थित 55 कार्यालयों में उत्कृष्ट पत्रिका का पुरस्कार दिया गया है। यह अनुभव ऐसा ही रहा जैसे कि किसी परीक्षा में पहली बार बैठते ही उसमे सर्वोच्च स्थान प्राप्त करना।

पासपोर्ट कार्यालय बरेली राजभाषा में उत्तरोत्तर विकास की ओर अग्रसर है जिसमें पत्रिका प्रकाशन उत्प्रेरक का कार्य करता है राजभाषा की पत्रिका प्रकाशन में कार्यालय के सभी सहयोगी एवं उनके परिवार के सदस्य अपना योगदान देते हैं इससे उनमें कार्यालय में हिंदी में काम करने की स्व-प्रेरणा मिलती है फलस्वरूप पासपोर्ट कार्यालय बरेली राजभाषा के में कार्य निरंतर राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त कर रहा है इसका उदाहरण यह है कि इस कार्यालय को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर विदेश मंत्रालय ने हिंदी में अच्छा कार्य करने के लिए 'क' क्षेत्र में स्थित पासपोर्ट कार्यालयों में प्रथम पुरस्कार दिया है। इस कार्यालय को यह पुरस्कार पहली बार मिला है।

''पांचाल'' के इस अंक में कार्यालय के अधिकतर अधिकारियों एवं कर्मचारियों तथा उनके परिवार के सदस्यों ने अपनी-अपनी कृतियां दी है इस अंक में आपको विभिन्न विधाओं पर रचनाएं मिल जाएंगी। एक तरफ ज्ञानवर्धक लेख हैं तो दूसरी तरफ मनोरंजक कविताएं हैं साथ ही कुछ हास्य व्यंग भी हैं, जबकि बच्चों की भी कलाकारी का कुछ अंश हमारी पत्रिका में समाहित है। इसके अतिरिक्त हमने प्रयास किया है कि इस पत्रिका के माध्यम से पासपोर्ट कार्यालय बरेली में हो रही गतिविधियों को चित्रों के माध्यम से आप तक पहुंचाएं। कुल मिलाकर पत्रिका के इस अंक को ऐसा डिजाइन करने का प्रयास किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति की रूचि का कुछ न कुछ इसमें मिल जाए तथा हिंदी के विकास में एक आहुति हमारी पत्रिका के अंक की भी रहे। पत्रिका को इस रुप तक पहुंचाने के लिए अपार सहयोग देने वाले पांचाल के संरक्षक / पासपोर्ट कार्यालय बरेली के अभिभावक मोहम्मद नसीम सर एवं कार्यालय के सभी सहयोगियों तथा उनके परिवार के सदस्यों को हार्दिक धन्यवाद।

अंत में इस आशा और विश्वास के साथ कि पांचाल पत्रिका का द्वितीय अंक हमारे सुधी पाठकों को अत्यंत रुचिकर एवं मनोरंजक तथा ज्ञानवर्धक लगेगा यह पत्रिका आपके सामने प्रस्तुत है आप सभी से अनुरोध है आप अपनी टिप्पणी जरूर भेजे ताकि भविष्य में और बेहतर करने के लिए हम प्रेरित हों और लगातार आपके समक्ष परिमार्जित पत्रिका प्रस्तुत करते रहें।

दिनेश सिंह
(दिनेश सिंह)

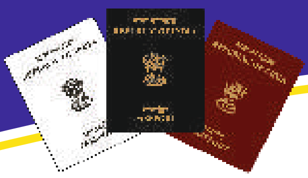

अनुक्रम

क्र.सं.	शीर्षक	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1	आधी दिहाड़ी (लेख)	मोहम्मद नसीम	10-11
2	संघ की राजभाषा (लेख)	मोहन लाल मीणा	12-13
3	शहर बरेली (लेख)	दिनेश सिंह	14-15
4	एक नौकरीपेशा महिला का संघर्षमय जीवन (लेख)	सुमन सक्सेना	15
5	समय का महत्व (कविता)	कौशल सिंह	16
6	माया मोह (कविता)	बाबू खान	16
7	घर-घर की कहानी (कविता)	संजय कुमार पाण्डेय	17
8	सुन्दर प्रस्तुति (कविता)	गौरी श्याम सक्सेना	17
9	जीवन में सकारात्मकता का महत्व (लेख)	श्रीश श्रीवास्तव	18
10	शायद मैं बूढ़ा हो गया (कविता)	खीम सिंह	19
11	सीख (लेख)	गिरीश चन्द्र	20
12	निरन्तर प्रयत्न (लेख)	सोनी बिष्ट	21
13	माँ-बाप (कविता)	डा0 सोनल	22
14	उड़ी जब चिरैया (कविता)	साक्षी सक्सेना	22
15	नन्ही ख्वाहिश (कविता)	विनय चन्द्र	23
16	जीवन एक संघर्ष है (कविता)	धर्मवीर सिंह	23
17	पश्चाताप (लेख)	मोहम्मद आतिर अंसारी	24
18	मैं न रहूँगा तुम तो होगे (कविता)	मनीष शार्मा	24
19	खग, उड़ते रहना (कविता)	दिव्या पाल	25
20	नारी का समाज में स्थान (कविता)	सविता भास्कर	25
21	राम लौट कब आओगे (कविता)	अनुराग दुबे 'अशुल'	26
22	शिक्षा का महत्व (लेख)	मोहम्मद सैफ	27-28
23	अखिर कैसी हैं वो (कविता)	सुमित कुमार	29
24	सलामी तुमको ऐ शहीदो (कविता)	अब्दुल समद	30
25	दाँतों की स्वच्छता (कविता)	हरीश कुमार	30
26	सफर-ए-जिदंगी (कविता)	नगमा बी	31
27	जीवन एक संघर्ष है (कविता)	अरशी	32
28	हिन्दी का उद्धार है (कविता)	भागमल सिंह	32
29	हँसना मना है (संकलन) - चुटकुले	रिद्धि सिंह	33

छायाचित्र अनुक्रम

30	बाल कलाकारो की चित्रकारी		34-35
31	प्रशस्ति-पत्र नगर राजभाषा कार्यान्यवयन समिति, बरेली द्वारा		36-37
32	पासपोर्ट समाचार		38-39
33	हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम 2021- पुरस्कार वितरण		40
34	"पांचाल" प्रथम अंक विमोचन एवं विश्व हिन्द दिवस कार्यक्रम		41
35	पासपोर्ट नियमों पर कार्यशाला		42
36	विश्व हिन्दी दिवस पर विदेश मंत्रालय का ऑनलाइन पुरस्कार वितरण समारोह		42
37	स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों पर निबंध प्रतियोगिता		43
38	देश की आज़ादी में हिन्दी का योगदान विषय पर कार्यशाला		43
39	आज़ादी का अमृत महोत्सव पर कार्यालय का प्रकाशमय भवन एवं पदयात्रा		44

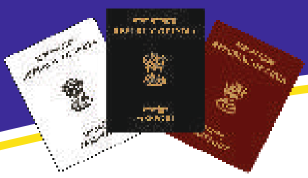

आधी दिहाड़ी

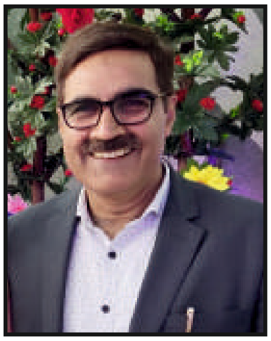

मोहम्मद नसीम
क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी

मैं खेत की मेंड़ पर बैठा अपनी रोटी में से चीटियाँ बीन रहा था, बड़ी-बड़ी चीटियां तो रोटियों को एक दूसरे से टकराकर झाड़ने से गिर गयीं थीं, लेकिन छोटी-छोटी चीटियाँ रोटी के अंदर तक घुसी हुई थी जो निकलने का नाम ही नहीं ले रही थी, इसीलिए एक एक चीटी बीनने की कोशिश कर रहा था। मेरे सामने ठेकेदार होरीलाल खेत की मेंड पर बैठा बीड़ी पी रहा था वह अभी दोपहर का खाना खाकर फ़ारिग हुआ था और मुझसे बार-बार कह रहा था कि जल्दी से खाना खा और काम पर लग जा, मैंने उससे घर जाकर खाना खाने की मोहलत मांगी, लेकिन उसने इनकार करते हुए कहा कि ''तू ने सुबह से काम ही क्या किया है, चार पौधे गड़े नहीं, कि कमर पकड़ कर खड़ा हो जाता है, तेरे बस का नहीं है यह काम, कल से मत आना, लेकिन आज की दिहाड़ी तो पूरी कर'' वह मुंह से बीड़ी का धुआं छोड़कर बड़बड़ाने लगा।

''लेकिन तुमने दूसरे मजदूरों को दोपहर में घर जाने दिया, जबकि उनके घर दूर है और मेरा घर बिलकुल खेत के क़रीब है, फिर भी मुझे नहीं जाने दे रहे हो'' मैं रोनी सूरत बनाकर मिनमिनाया। इस बात पर होरीलाल और भड़क गया, वह बोला ''उनकी सरीकत मत कर देख वह नजबशाह की लड़की तुझ से छोटी है, लेकिन जितना चहोड़ा वह लगा गयी, तुझ से पूरे दिन में नहीं लगेगा, मैंने बहस करना मुनासिब नहीं समझा और सोचा कि अगर आधे दिन में मैं घर चला गया, तो यह आज की दिहाड़ी नहीं देगा, लेहाज़ा मैंने रोटी साफ़ की और खाने बैठ गया, लेकिन यह क्या? आमलेट वाला डिब्बा जैसे ही खोला, पूरा चीटियों से भरा हुआ था, मेरे बदन में झुरझुरी सी दौड़ गई और मैं एकदम डिब्बा छोड़कर पीछे हट गया, मैंने डिब्बे को मेड़ पर उलट दिया, इस बार में होरीलाल से पूछे बगैर खाली डिब्बा और रोटी उठाकर घर की तरफ चल दिया, पीछे से मुझे होरीलाल की आवाज़ सुनायी दी, देख लेना! एक पैसा नहीं दूंगा'', लेकिन मुझे उसकी धमकी की कोई परवाह नहीं थी।

यह क़िस्सा 1975 का है, स्कूल में जून की छुट्टियां हो गयीं थीं, मैं धुंधरी स्कूल में पांचवीं क्लास का तालबे-इल्म था, रिजल्ट आ गया था क्लास में मेरी सेकंड पोजीशन थी। मैं बहुत खुश था, क्योंकि मुझे लाल रंग का एक प्लास्टिक का गिलास मिला था जिस पर मेरा नाम भी अंकित था। छठी क्लास में दाखले के लिए मैं बहुत पुरजोश था, मैंने अम्मी से ज़िद की, कि आजकल खेतों में धान की पौध लग रही है, बड़ों की दिहाड़ी 18 रूपये और बच्चों की 12 रुपये है, अगर मैं दस दिन पौध लगा लूँ तो 120 रुपए जमा हो जाएंगे, जिससे मेरी किताबें, स्कूल की फ़ीस और कपड़े वगैर सब का इंतिज़ाम हो जायेगा। अम्मी ने बहुत मना किया कि बेटा यह तुम्हारा काम नहीं है तुमने कभी खेतों में काम नहीं किया है, लेकिन मैं नहीं माना, अम्मी को राजी होना पड़ा क्योंकि मेरे बड़े भाई की भी यही ख्वाहिश थी। हमारे अब्बा जिन्हें हम प्यार से भाई साहब कहते थे वह दुकान लेकर बाज़ार जाने की तैयारी कर रहे थे उनकी भी मरज़ी नहीं थी कि हम लोग खेतों पर मज़दूरी करने जाएँ, लेकिन जब अम्मी राज़ी हो गयीं तो भाईसाहब क्या कहते। लेहाज़ा बड़े भाई किसी दूसरे खेत पर चले गए और मैं घर के नज़दीक वाले खेत में होरीलाल के साथ पौध लगाने चला गया। होरीलाल हमारे गांव तिरकुनिया का नहीं बल्कि पास के गाँव फरीदपुर से आता था उसके अपने खेत तो न थे, लेकिन वह किसानों के खेत में पौध लगाने का ठेका लेता था।वह लगभग 45 साल का छरहरे बदन का मुख्तसिर सी क़द काँठी का आदमी था लेकिन बला का फुरतीला, उसे पौध लगाते देखना मेरे लिए एक बहुत दिलचस्प इनकशाफ था मैंने धान की रोपाई को जिसे गाँव में चहोड़ा लगाना कहते हैं, इतने नज़दीक से कभी न देखा था, लेकिन आज खुद पौध लगाने का मौका मिला था या यूँ कहिये कि सज़ा मिली थी। बहरहाल होरीलाल को पौध लगाता देख ऐसा लग रहा था जैसे सफ़ेद चादर पर सिलाई मशीन हरे रंग के धागे से कढ़ाई कर रही हो, उसका दाहिना हाथ बाएं हाथ से पौधा लेता और गुड़प से पानी में गाड़ देता, उसका हाथ पानी में गोता तो, लगता था जैसे पानी मक़नातीस की तरह उसके हाथ को खींच लेता हो। उसके बाएं हाथ में कब पौध की नयी गड़िया आ जाती और कब उसके पैर पीछे को हटते चले जाते पता ही नहीं चलता। उसके हाथ पैरों में बला की फुर्ती और कोआर्डिनेशन था। वह खेत में जिधर जाता उसे हरा कर डालता, लगता था जैसे होरीलाल पौध लगाने के लिए ही पैदा हुआ है।

उसके बर अक्स, मेरा यह हाल था कि में धान की पौध हाथ में लिए मूर्खों की तरह इधर उधर देखता, कधड़ में घुटनों तक धँसे पैर कीचड़ में सना बदन दर्द से टेढ़ी हुई जाती कमर लगता जैसे किसी ने अंगारे रख दिए हों, खुदा की पनाह एक एक पौधा ज़मीन में ऐसे गाड़ता जैसे बस एक ही पौधा गाड़ कर घर चले जाना है, 4-5 पौधे लगा कर कमर सीधी करने के लिए खड़ा होता, अपने पैर को एक एक करके उखाड़ता और उन्हें दूसरी जगह टटोल कर ऐसे रखता कि कहीं किसी दलदल में न धंस जाएँ यह मेरा क्लास रूम नहीं था जहाँ मैथ्स का सवाल हल करने के लिए सबसे पहले मेरा हाथ उठता था, यह कबड्डी और लंगड़ी शिकार भी नहीं था जहाँ मैं अच्छे अच्छों को पछाड़ दिया करता था, इस खेत में आकर मुझे लगा जैसे अब आया ऊँट पहाड़ के नीचे।

कहते हैं अल्लाह के हर काम में मस्लेहत होती है, रोटी और आमलेट में चीटियों का होना आधे दिन में ही काम से छुटकारा मिलने की वजह बन गया। मेरी हालत बहुत खस्ता थी पैर ऐसे जैसे हाथी के सुबह से कदहड़ में घुटनों तक धंसे होने की वजह से ऐसा महसूस होता था जैसे मैं अपने पैरों को खेत में से उखाड़ के लाया हूँ और उन्हें चलने के लिए पहली बार इस्तेमाल किया हो प्यास की शिद्दत ऐसी, जैसे जुबान में कांटे निकल आए हों, भूख का आलम ये के अब गिरा के तब, आखिरकार लड़-खड़ाता हुआ घर पहुंचा, अम्मी ने दरवाजा खोला इससे पहले कि वह सवाल करती मैंने पूरा माजरा बयान कर दिया, इतना सुनना था कि वह अपना सर पकड़ कर बैठ गई, बोलीं, आने दो उस नासपीटे को, अच्छे से खबर लेती हूँ उस कमीने की, मेरा बच्चा क्या उसका गुलाम है? जो उसने ऐसा सुलूक किया, अम्मी मेरे लिए गरम-गरम रोटियां बनाती जा रही थी और होरीलाल को बुरा भला कहती जा रही थीं।

मैं खाना खाकर कब सो गया पता ही न चला, अचानक मेरे कानो में अम्मी के ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने की आवाज़ें आ रही थीं, वह दरवाज़े पर किसी को डांट रहीं थीं मैं समझ गया की दरवाज़े पर ज़रूर होरीलाल है। मैं आँखें मलता हुआ दरवाज़े पर पहुंचा, मुझे होरीलाल की पीठ दिखाई दी, वह वापस जा रहा था, अम्मी ने दरवाज़ा बंद किया उनके हाथ में 6 रूपए थे, शायद यह मेरे आधे दिन की दिहाड़ी थी।

लेखक के बचपन की एक आपबीती....

संघ की राजभाषा

मोहन लाल मीणा
सहायक निदेशक (राजभाषा),
विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली

भारत एक संप्रभुता संपन्न लोकतांत्रिक गणतंत्र देश है और लोकतंत्र की सफलता के लिए उस देश का राजकाज उसकी जनता की भाषा में होना चाहिए। भारत जैसे विशाल देश में अनेक भाषाएँ एवं बोलियाँ बोली जाती हैं, उनमें से संविधान में 22 भाषाओं का उल्लेख किया गया है। लेकिन केंद्र सरकार का कामकाज चलाने और केंद्र एवं राज्यों के बीच संपर्क स्थापित करने के लिए संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को हिंदी भाषा को संघ की राजभाषा के रूप में चुना गया है क्योंकि यह भाषा न केवल देश के अधिकांश लोगों द्वारा बोली एवं समझीजाती है बल्कि यह भारत की धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक परंपराओं को जोड़ने की भी कड़ी है।

संविधान के भाषायी प्रावधान के अंतर्गत अनुच्छेद 120, 210 तथा 343 से 351 तक के उपबंध राजभाषा से संबंधित हैं। संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार देवनागरी लिपि में लिखी हिंदी संघ की राजभाषा होगी तथा संघ के सरकारी प्रयोजनों के लिए भारतीय अंकों का अंतरराष्ट्रीय रूप प्रयुक्त होगा। अनुच्छेद 343 (2) के अनुसार संविधान लागू होने से 15 वर्ष तक यानी 26 जनवरी, 1965 तक हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी का प्रयोग भी होता रहेगा। अनुच्छेद 343 (3) के अनुसार संसद इस अवधि को आगे भी बढ़ा सकती है।

हिंदी को सामाजिक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का माध्यम बनाने हेतु संघ को अनुच्छेद 351 के अंतर्गत हिंदी के विकास, प्रसार और समृद्धि के लिए मुख्यत: संस्कृत तथा गौणत: अन्य भारतीय भाषाओं के शब्दों को सम्मिलित करने का दायित्व दिया गया।

हिंदी शिक्षण योजना स्वैच्छिक आधार पर 1952 से तत्कालीन शिक्षा मंत्रालय के अधीन संचालित हो रही थी किंतु जुलाई 1955 से इसे गृह मंत्रालय के अधीन स्थानांतरित कर दिया गया। इसी वर्ष संविधान के अनुच्छेद 344 (1) के अंतर्गत श्री बी. जी. खरे की अध्यक्षता में प्रथम **राजभाषा आयोग** की स्थापना की गई। आयोग की सिफारिशों के आधार पर ही अनुच्छेद 344 (3) के अनुसार 1957 में तत्कालीन गृह मंत्री गोविंद बल्लभ पंत की अध्यक्षता में एक **संसदीय समिति** का गठन किया गया जिसे पंत समिति के नाम से भी जाना जाता है।

संसदीय समिति की रिपोर्ट के आधार पर ही राष्ट्रपति जी ने 1960 में हिंदी शब्दावली का निर्माण, संहिताओं एवं विधि साहित्य का हिंदी अनुवाद कर्मचारियों को हिंदी का प्रशिक्षण, हिंदी प्रचार प्रसार विधेयकों, उच्चतम एवं उच्च न्यायालय की भाषा के संबंध में विशेष व्यवस्था जारी करने के निर्देश जारी किए जिसके फलस्वरूप **वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली** आयोग की स्थापना हुई। 27 अप्रैल, 1960 के राष्ट्रपति जी के आदेश द्वारा कर्मचारियों के लिए हिंदी भाषा हिंदी टंकण तथा हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण अनिवार्य किया गया।

अनुच्छेद 343 (3)के अनुपालन के फलस्वरूप 1963 में **राजभाषा अधिनियम** बनाया गया। इसी अधिनियम की धारा 3 (3) के अंतर्गत 14 प्रकार के दस्तावेज यथा अधिसूचनाएँ संकल्प, सामान्य आदेश, नियम, प्रशासनिक व अन्य प्रतिवेदन, प्रेस विज्ञप्तियाँ ,संविदा करार, लाइसेंस, परमिट, निविदा सूचना, निविदा फार्म, संसद के किसी सदन या सदनों के समक्ष रखे जाने वाले प्रशासनिक व अन्य प्रतिवेदन तथा संसद किसी भी सदन में प्रस्तुत किए जाने वाले अन्य सरकारी कागजात हिंदी-अंग्रेजी द्विभाषी रूप में जारी किए जाने अनिवार्य कर दिए गए।

किया जो 18 जनवरी, 1968 को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया गया। इसे **राजभाषा संकल्प** 1968 की संज्ञा दी गई। इसमें पहली बार सरकार को निदेश दिए गए कि हिंदी के विकास के संबंध में एक गहन तथा व्यापक **वार्षिक कार्यक्रम** तैयार करे, उसे कार्यान्वित कर उसकी प्रगति की **वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट** तैयार कर संसद में प्रस्तुत करें। इसी के अनुपालन में राजभाषा विभाग द्वारा प्रतिवर्ष एक वार्षिक कार्यक्रम तैयार किया जाता है।

अन्य मंत्रालयों/विभागों के प्रशासनिक व नियम, पुस्तकों आदि के अनुवाद के लिए मार्च 1971 में केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो की स्थापना की गई। बाद में मुंबई, बेंगलूर तथा कोलकाता में भी **केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो** स्थापित किए गए। साथ ही विधि संबंधी कार्यों के अनुवाद हेतु **विधायी आयोग** की स्थापना नई दिल्ली में की गई।

हिंदी के व्यापक प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु केंद्रीय हिंदी समिति, **केंद्रीय हिंदी सलाहकार समिति, संसदीय राजभाषा समिति, केंद्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समितियों** की स्थापना की गई। 1974 में सरकार द्वारा तीसरी श्रेणी एवं कार्य प्रभारित कर्मचारियों को छोड़कर केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रणाधीन निगमों, उपक्रमों, बैंकों आदि के अधिकारियों, कर्मचारियों के लिए भी हिंदी भाषा, हिंदी टंकण एवं हिंदी आशुलिपि का प्रशिक्षण अनिवार्य कर दिया गया।

1983 में यांत्रिक और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों द्वारा हिंदी को बढ़ावा देने तथा उपलब्ध-द्विभाषी उपकरणों के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से राजभाषा विभाग में तकनीकी कक्ष की स्थापना की गई। 1985 में हिंदी भाषा, हिंदी टंकण और हिंदी आशुलिपि के गहन प्रशिक्षण हेतु **केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान** की स्थापना की गई। हिंदी भाषा, टंकण एवं आशुलिपि के गहन प्रशिक्षण, पत्राचार पाठ्यक्रम, कार्यशालाओं के आयोजन तथा प्रेरणा व सद्भावना स्वरूप विभिन्न प्रोत्साहन योजनाऐं लागू करके राजभाषा हिंदी के व्यापक प्रचार-प्रसार में उत्तरोत्तर वृद्धि हो रही है।

शहर बरेली

दिनेश सिंह
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

बरेली शहर उत्तर प्रदेश के महत्त्वपूर्ण शहरों में से एक है यह रामगंगा नदी के तट पर स्थित है तथा यह प्रदेश की राजधानी लखनऊ व देश की राजधानी नई दिल्ली के लगभग बिल्कुल मध्य में स्थित है तथा दोनों से 250 किमी की दूरी पर है। यह एक विकास शील शहर है। बरेली से पर्यटक प्रिय शहर नैनीताल मात्र 135 किमी व आगरा लगभग 200 किमी दूर है साथ ही भगवान श्री कृष्ण की जन्मभूमि मथुरा भी 200 किमी की दूरी पर है।

बरेली शहर कई नामों से मशहूर है इसे बांस बरेली भी कहा जाता है साथ ही इसे नाथ नगरी भी कहा जाता है और यह शहर-ए आला हजरत के नाम से भी मशहूर है। इस शहर के अंदर सभी धर्म के लोग एक साथ मिलजुल कर रहते हैं। यह शहर 1966 में आई हिंदी फिल्म मेरा साया के गाने ''झुमका गिरा रे बरेली के बाजार में'' गीत के कारण झुमके वाले शहर के रूप में पूरे देश में जाना जाता है। अब तो शहर के एक मुख्य चौराहे में बाकायदा एक बड़ा झुमका लगाया गया है और उस चौराहे को झुमका चौराहे का नाम दिया गया। बरेली का सुरमा और माझा भी ख्याति प्राप्त है।

इस शहर के इतिहास के विषय में श्री जगत सिंह कठेरिया का नाम आता है जिन्होंने करीब 1500 ईस्वी के आसपास जगतपुर की नींव डाली, जो आज भी बरेली के पुराना शहर में एक मोहल्ले के रूप में मौजूद है। उसके बाद जगत सिंह कठेरिया के दो पुत्र हुए, जिनके नाम थे बास देव और बरल देव इन्होने ही बरेली की स्थापना 1537 में की और बरेली आबाद हुआ।

जनपद बरेली प्राचीन इतिहास की धरोहर है। उत्तरी पांचाल की राजधानी अहिछत्र के भव्य भग्नावशेष बरेली की आंवला तहसील के रामनगर नामक गाँव में पाए जाते हैं। महाभारत महाकाव्य के अनुसार बरेली क्षेत्र द्रौपदी की जन्मभूमि है। यहाँ गुप्तकालीन सिक्के भी मिले हैं। जनश्रुति के अनुसार महात्मा बुद्ध ने भी प्राचीन काल में अहिछत्र क्षेत्र का भ्रमण किया था। आज भी अहिक्षत्र में एक विश्व प्रसिद्ध जैन मंदिर है जहाँ दूर-दूर से लोग दर्शन करने आते हैं।

इस शहर को नाथ नगरी के रूप में भी जाना जाता है यहां पर धोपेश्वर नाथ, तपेश्वर नाथ, त्रिवटी नाथ, मणिनाथ, बनखंडी नाथ, अलखनाथ और पशुपतिनाथ आदि भगवान शिव के पवित्र मंदिर भी हैं जो इस शहर की शोभा को और ज्यादा बढ़ा देते हैं इन सभी मंदिरों में पुरानी मान्यताओं के हिसाब से दूरदराज से लोग आते हैं और भगवान शंकर के दर्शन करते हैं।

इस्लामिक विद्वान इमाम अहमद रजा खान बरेलवी यानी कि आला हजरत भी इसी शहर से हैं उनकी दरगाह शहर के अंदर हिंदू, मुस्लिम, सिख एकता का प्रतीक है सभी धर्मों के लोग दरगाह ए आला हजरत में अकीदत के साथ जाते हैं सुन्नी मुसलमानों का यह सबसे बड़ा केंद्र भी माना जाता है। हर साल होने वाले उनके उर्स में लाखों की संख्या में देश-विदेश से जायरीन आते हैं। दरगाह-ए आला हजरत दुनिया भर में मशहूर है इस दरगाह के मुरीद लाखों की तादात में दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में बसे हुए हैं यही कारण है कि उर्स-ए रजवी में प्रतिवर्ष लाखों की तादात में भीड़ देखने को मिलती है।

बॉलीवुड की दुनिया में भी बरेली शहर ने अपना जौहर दिखाया है प्रियंका चोपड़ा बॉलीवुड की मशहूर अभिनेत्री हैं जो इसी शहर

से ताल्लुक रखती हैं बचपन में यहीं पली-बढ़ी प्रियंका चोपड़ा इस वक्त दुनिया में अपना नाम रोशन कर रही हैं और बरेली को उन्होंने एक अलग पहचान दी है।

शिक्षा के बीच क्षेत्र में रोहिलखंड क्षेत्र को बरेली ने बहुत कुछ दिया है यहां पर मौजूद महात्मा ज्योतिबा फुले रुहेलखंड विश्वविद्यालय क्षेत्र को लगातार शिक्षा में आगे बढ़ा रहा है।

बरेली के इज्जत नगर में स्थित भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान (आई.वी.आर.आई.) पशु चिकित्सा में भारत का एक प्रमुख शोध संस्थान है। बरेली में वायु सेना / थल सेना के बड़े केन्द्र भी है। जहां देश के विभिन्न कोनों से छात्र व वैज्ञानिक शोध करने के लिए आते हैं। वर्तमान में बरेली को शिक्षा और स्वास्थ्य का एक केंद्र माना जाता है।

एक नौकरीपेशा महिला का संघर्षमय जीवन

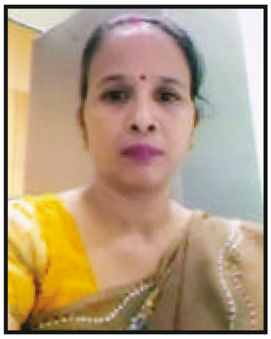

श्रीमती सुमन सक्सेना
सहायक अधीक्षक

कामकाजी महिला का जीवन वास्तव में एक चुनौतीपूर्ण जीवन होता है। जोकि समाज में रहने वाले लोगों को तथा स्वयं उस व्यक्ति के लिए जो खुद पर बिताता है, दोनों के नजरिये से बहुत अंतर रखता है एक कामकाजी महिला अर्थात जो किसी सरकारी दफ्तर या किसी प्राइवेट व्यवसाय में काम करती हो, जैसा कि सामाजिक नजरिए में कहा जाता है कि वाह क्या बात है देखो उस औरत को अपना कमाती है मन माफिक खर्चा करती है तथा और भी कई प्रकार के दकियानूसी बातें ? बस आजकल के लोगों को यही दिखता है कमाना। यह नहीं दिखता कि वो अपने जीवन का क्या क्या गवाती है, जैसे कि हर वो पल, हर वो खुशी जोकि उसको अपनों से हर पल न मिलकर मात्र कुछ घंटों में ही पूरा करके भरपाई करनी पड़ती है। एक घरेलू महिला जो कि अपने बच्चों को हर पल अपने आप से कार्य करके उनकी हर छोटी बड़ी खुशी में शामिल होकर सुख का आनंद महसूस करती है, वही एक नौकरीपेशा महिला का बच्चा अपनी तथा दूसरे बच्चों की पूरे दिन की बातें बताने के लिए अपनी माँ का शाम तक लौटने का इंतजार देखता है और फिर ये कहना कि आप दोनों तो मुझे अकेला छोड़ के चले जाते हो। उस वक्त उस महिला से पूछो कि वो उन कुछ ही घंटों में अपने बच्चे को पूरे दिन का प्यार उड़ेलना चाहती है लेकिन क्या करें क्योंकि वो चाहकर भी कुछ नहीं कर सकती । सुबह उठते ही उसे फिर वही दिनचर्या निभानी पड़ती है जो कि उसके जीवन के लिए जरूरी है। सुबह उठना बच्चे तथा परिवार वालों को रसोई में से ही काम करते हुए आवाज लगाना कि उठो स्कूल जाना है, ऑफिस जाना है। सभी के लिए लंच तथा खाना बनाकर रखकर जाना, जल्दी जल्दी रोजमर्रा के काम से निपटकर ऑफिस जाना, ऑफिस जाकर अपना कार्य पूर्णरूप से करना। फिर शाम को थके और उलझनों से उलझे शरीर को लेकर लौटना और दरवाजा खुलते ही बच्चे का बस इतना कहते हुये कि मेरी माँ आ गई और कसकर गले लिपटना उस वक्त एक नौकरीपेशा माँ का दिल दिमाग अपने बच्चे की ओर लग जाता है और वो अपनी पूरे दिन की थकान भूल अपने बच्चे तथा घर में लिप्त हो जाती है। उसके बाद घर के कामों के साथ साथ अपने बच्चे को पढ़ाना-लिखाना भी उसी की एक जिम्मेदारी होती है। उसे भी अपने बच्चे के भविष्य की उतनी ही चिंता होती है जितनी कि घरेलू महिलाओं को।जबकि घरेलू महिलाएं ये सभी उत्तरदायित्व अपना पूरा समय खर्च करके पूरा करती है, जबकि एक कामकाजी महिला अपने दिन के 8 से 9 घंटे सरकारी कार्यों में लगाने के बावजूद भी अपने परिवार, बच्चों तथा सामाजिक रिश्तों को बखूबी निभाती हैं। इसलिए सच ही कहा गया है कि एक नौकरीपेशा महिला संघर्षमय जीवन बिताते हुये भी अपने बच्चों को एक अच्छा तथा उज्ज्वल भविष्य देती है।

समय का महत्व

कौशल सिंह
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

राजा हो या महाराजा, ज्ञानी या विज्ञानी ।
आगे समय के न चले, किसी की भी मनमानी ।।
जब समय विपरीत हो, बस न किसी का चल पाय।
बैठे चाहे कोई मचान पर, सांप उसे डंस जाय ।।
जब समय अनुकूल हो, संभव कुछ भी हो जाय।
पाये कोई मोती जंगल में, खजाना दबा किसी को मिल जाय ।।

जो व्यर्थ समय अपना करे, बाद बहुत पछताय ।
हासिल कुछ न हो उसे, खाली हाथ रह जाय ।।
मूल्य समय का समझे जो, मूल्यवान बन जाय।।
उन्नति जीवन में वो करे, लक्ष्य उसे मिल जाय ।।
काम समय पर जो करे, समय पाबन्द कहलाय ।
विश्वास उस पर सब करें, मान उसका बढ़ जाय ।।

साथ समय के जो न चले, कुछ न वो कर पाय।
इस जीवन की दौड़ में, पीछे वो रह जाय।।
हर पल समय का कीमती, जाने जो ये बात ।
काम बनाये अपना, जग में हो विख्यात ।।
समय बड़ा अनमोल है, लाभ लो इसका उठाय ।
वो समय न वापस आ सके, जो बीत एक बार जाय ।।

माया मोह

काहे इतना मोह जगत से यह प्राणी अज्ञानी रे।
दुनिया के जंजाल से बचना, दुनिया बड़ी सयानी रे।।
भूल गया तू पुण्य कर्म सब, पाप कर्म की ठानी रे।
माया मोह के जाल ने तुम को बना दिया अज्ञानी रे।।
पाप की गठरी धोते-धोते सारी उम्र गुजारी रे।
पुण्य कर्म से स्वर्ग मिलते हैं यह पुरखों की वाणी रे ।।
देह मोह के कारण प्राणी जी भर की मनमानी रे ।
मन मानी कि तूने प्राणी पुरखों की ना मानी रे।।
जीवन जल की एक ही उपमा, समय गए वह जायेगा।
तेरा जीवन जल की धारा मानो बहता पानी रे।।
माया मोह में जीवन बीता बुद्धि हुई दीवानी रे।
गर्व किया काया पर तूने काया हुई पुरानी रे।
चलता था तू अकड़ अकड़ कर धरती मां के आंचल पर ।
कहां गया अभिमान वह तेरा हे प्राणी अभिमानी रे।।
माया तूने जोड़ी प्राणी, बना नहीं तू दानी रे।
जिस माया से प्रेम किया वह माया हुई बिरानी रे।।

बाबू खान
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

घर-घर की कहानी

मैं, मेरी पत्नी और हमारे बच्चे, एक जादुई घर में रहते हैं....
हम अपने गंदे कपड़े उतार देते हैं, जिन्हें अगले दिन साफ कर दिया जाता है।
हम स्कूल और ऑफिस से आते ही अपने जूते उतार देते हैं। फिर अगली सुबह हम साफ-सुथरे पॉलिश वाले जूते पहनते हैं....
हर रात कूड़े की टोकरी कचरे से भरी होती है और अगली सुबह खाली हो जाती है।
मेरे जादुई घर में खेलते समय बच्चों के कपड़ों से बदबू आती है, लेकिन अगले ही पल वे साफ हो जाते हैं... और उनके खेल उपकरण जल्दी से अपने बक्से में फिर से व्यवस्थित हो जाते हैं।

मेरे जादुई घर में हर दिन मेरे और मेरे बच्चों के लिए पसंदीदा खाना बनता है...
मेरे जादुई घर में, आप सुन सकते हैं माँ मम्मी मम्मा हर दिन लगभग सौ बार पुकारा जाता है
मम्मा नेल क्लिपर कहाँ है.... ?
मां मेरा गृहकार्य पूरा करो... मम्मा, भाई मुझे पीट रहा है...
मम्मा, आज मेरा स्कूल लंच बॉक्स बनाना मत भूलना। माँ आज ही हलवा पूड़ी बनाओ
माँ मुझे आज चींटी नहीं मिल रही हैं। वह यहां रोज एक लाइन में चलती हैं माँ मेरे लिए एक सैंडविच बनाओ...मुझे भूख लगी है।
माँ मुझे वॉशरूम जाना है.... मम्मा, मुझे पहले भूख लगी थी... अभी नहीं रात को सोने से पहले जो आखिरी शब्द सुना वो है 'माँ' और सबसे पहला शब्द सुना है 'माँ' जब मैं सुबह अपने जादुई घर में उठता हूँ....
बेशक, इस जादुई घर की ओर अब तक कोई भी आकर्षित नहीं हुआ है। हालांकि सभी के पास यह जादुई घर है.... और शायद ही कभी किसी ने इस घर के जादूगर का धन्यवाद किया होगा
इन जादुई घरों का जादूगर कोई और नहीं बल्कि हर पत्नी और मां है। जो अपने ही घरों में करते हैं ऐसा जादू...
भगवान मेरी हर बहिन को आशीर्वाद दें, जिनके धैर्य और अनंत कर्म हर घर में समृद्धि लाते हैं।

संजय कुमार पाण्डेय
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

सुन्दर प्रस्तुति

गौरी श्याम सक्सेना
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

जो पिता के पैरों को छूता है वह कभी गरीब नहीं होता
जो मां के पैरों को छूता है वह कभी बदनसीब नहीं होता
जो भाई के पैरों को छूता है वह कभी गमगीन नहीं होता
जो बहन के पैरों को छूता है वह कभी चरित्रहीन नहीं होता
जो गुरु के पैरों को छूता है उस जैसा कोई खुश नसीब नहीं होता
अच्छा लगने के लिए मत जियो
बल्कि अच्छा करने के लिए जियो
जो झुक सकता है वह सारी दुनिया को झुका सकता है
अगर बुरी आदत समय पर ना बदली जाए
तो बुरी आदत समय बदल देती है। चलते रहने से ही सफलता मिलती है
रुका हुआ तो पानी भी बेकार हो जाता है।
झूठे दिलासे से स्पष्टीकरण बेहतर है
मुसीबत सब पर आती है कोई निखर जाता है कोई बिखर जाता है
इंसान से ताकतवर मौत है जो उसे खा जाती है
कर ले कुछ अच्छे कर्म साथ यही तेरे जाने हैं

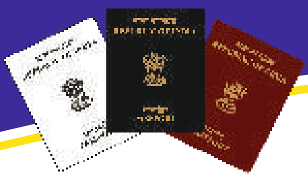

जीवन में सकारात्मकता का महत्व

श्रीश श्रीवास्तव
सहायक अधीक्षक

हम सभी ने अपने बचपन में एक कौए की कहानी जरूर पढ़ी होगी ।

जिसमें कौए ने अपनी सकारात्मक सोच के साथ प्रयास किया और घड़े को कंकड-पत्थर से भरकर अपनी प्यास बुझाई । अगर कौआ अपनी सोच सकरात्मक न रखता तो शायद ही अपना जीवन बचाने में सफल हो पाता।

इस कहानी से हमें यह सबक मिलता है कि हमारा संपूर्ण जीवन हमारी सोच का ही आईना होता है हम जैसा सोचते हैं हमारा जीवन वैसा बन जाता है यदि हमारी सोच नकारात्मक है तो हमें हर जगह हर व्यक्ति में हर परिस्थिति में, बुराई नज़र आएगी और यदि हमारी सोच सकारात्मक है, तो हमें बुराईयों में भी अच्छाई नजर आएगी। यदि हम नकारात्मक दृष्टिकोण से देखेंगे तो हमें अवसर में भी आपदा दिखाई देगी किन्तु सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने से हमें आपदा में भी अवसर दिखाई देगा।

सकारात्मक सोच आज इस भागती-दौड़ती हुई जिंदगी में गाड़ियों में लगे जी.पी.एस. की तरह है जो यात्री को अपने लक्ष्य तक पहुंचने में मदद करता है इस आधुनिकता के युग में अगर सकारात्मक सोच व्यक्ति के पास नहीं है तो उसे प्रतियोगिता भरे इस माहौल में अवसाद, बीमारियों के अलावा कुछ हासिल नहीं होगा ।

किसी शायर ने ठीक कहा है, '' कौन कहता है आसमा में सुराख नही हो सकता एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों'' अगर व्यक्ति में सकारात्मक सोच है तो वह महात्मा गांधी जी की तरह अहिंसा को हथियार बनाकर देश को स्वतंत्रता दिला सकता है नेल्सन मंडेला की तरह श्वेत -अश्वेत का भेद समाप्त कर सकता है अब्राहम लिंकन की तरह अमेरिका गृह युद्ध की समाप्ति कर अमेरिका को एक संघ बना सकता है। ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की तरह महान वैज्ञानिक बन सकता है या फिर कपिल देव की तरह 1983 में विश्व की सर्वश्रेष्ठ क्रिकेट टीम मानी जाने वाली वेस्टइंडीज को हरा विश्वकप जीत सकता है।

सकारात्मक सोच के माध्यम से ही हम अपने जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति कर सकते हैं ।सकारात्मक सोच कोई क्षणिक उपलब्धि नहीं है बल्कि यह एक निरंतर किया गया अभ्यास है जो हमें बचपन से ही अपने परिवार, विद्यालय एवं मित्रों से सीखने को मिलता है ।

अत: यह कहना अनुचित नहीं होगा कि जीवन का सार व्यक्ति के मन-मस्तिष्क की सकारात्मकता में ही सम्मिलित है क्योंकि जीवन का अर्थ है हर तरह की परिस्थिति में आगे बढ़ते रहना, बिना सकारात्मक सोच के व्यक्ति स्वयं के संघर्ष एवं अवसाद में बढ़ावा कर लेता है इसलिए व्यक्ति को मुख्यत: सकारात्मकता को जीवन का मूलमंत्र स्वीकार करना चाहिए।

शायद मैं बूढ़ा हो गया

खीम सिंह
सहायक अधीक्षक

बादल गरज रहे थे पानी खूब बरस रहा था।
बच्चे सब भीग रहे थे गा रहे थे नाच रहे थे।।
मन मेरा खूब नाचने व भीगने का हो रहा था।
जब उठने की कोशिश की।
तो ये शरीर ने जबाब दे दिया।।
तब लगने लगा कि शायद मैं बूढ़ा हो गया।
खेत की पगडंडी पर लोग चल रहे थे।।
बच्चे भी पगडंडी पर फिसल रहे थे।
मन भी मेरा बहुत हो रहा था।।
जब पगडंडी पर चलने की कोशिश की।
तो ये शरीर ने जबाब दे दिया।।
तब लगने लगा कि शायद मैं बूढ़ा हो गया।
खेत खलिहानों में हरियाली भी खूब थी ।।
कोई निराई कर रहा था तो कोई खर पतवार छाँट रहा था
मन मेरा खूब खेत में काम करने को था।
जब कोशिश की तो ये शरीर जवाब दे गया
तब लगने लगा कि शायद मैं बूढ़ा हो गया।
बारात जा रही थी बैण्ड भी बढ़िया सा बज रहा था
उस बारात का मैं भी एक बराती था
मन भी मेरा नाचने को हो आया
जब नाचने की कोशिश की तो ये शरीर जवाब दे गया
तब लगने लगा कि शायद मै बूढ़ा हो गया।
खाना भी बढ़िया था खाने वाले भी बहुत थे।।
जब हमने कोशिश की तो दाँतों ने जवाब दे दिया
गाड़ी पटरी पर दौड़ने लगी लोग दौड़ गाड़ी पकड़ रहे थे
जब मैने कोशिश की तो शरीर जवाब दे गया
तब लगने लगा कि शायद मैं बूढ़ा हो गया।।
सामने बढ़िया सी झाकियां थी देखने वालों की भीड़ थी।
मन हमारा भी हुआ पर हमारे आखों में तो चश्मा था।।
चश्मा उठा के देखा तो आखों ने जबाब दे दिया।
तब लगने लगा कि शायद मैं बूढ़ा हो गया।
सामने मिठाईयां भी बहुत थी उनमें खुशुबू भी बहुत थी ।।
जैसे हमने खाने की कोशिश की तो किसी ने पूछ लिया क्या शुगर जांच कराई थी।
तब लगने लगा कि शायद मैं बूढ़ा हो गया।।
बेटे से कहा थोड़ा सा यह काम करके लाना।
वह बोला आप से तो होता नहीं बस रट लगाए रहते हो जब मैने कोशिश की तो शरीर जवाब दे गया
तब लगने लगा कि शायद मैं बूढ़ा हो गया।।

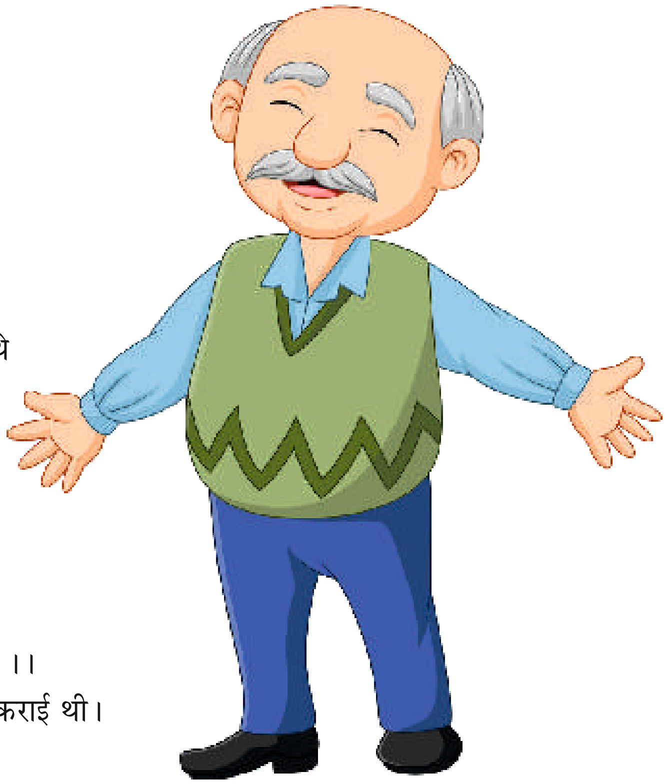

सीख

गिरीश चन्द्र
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

एक बेटा अपने वृद्ध पिता को रात्रि भोजन के लिए एक अच्छे रेस्टोरेंट में लेकर गया। खाने के दौरान वृद्ध पिता ने कई बार भोजन अपने कपड़ों पर गिराया रेस्टोरेंट पर बैठे दूसरे खाना खा रहे लोग वृद्ध को घृणा की नजरों से देख रहे थे लेकिन वृद्ध का बेटा शांत था। खाने के बाद बिना किसी शर्म के बेटा, वृद्ध को वाशरूम ले गया। उसके कपड़े साफ किए उसका चेहरा साफ किया, बालों में कंघी की, चश्मा पहनाया फिर बाहर लेकर आए ।

सभी लोग खामोशी से उन्हें ही देख रहे थे। बेटे ने बिल पे किया और वृद्ध पिता के साथ बाहर जाने लगा । तभी डिनर कर रहे एक अन्य वृद्ध ने बेटे को अवाज़ दी और उससे पूछा ''क्या तुम्हें नहीं लगता कि यहाँ अपने पीछे तुम कुछ छोड़ कर जा रहे हो ?'' बेटे ने जवाब दिया नहीं सर, मैं कुछ भी छोड़कर नहीं जा रहा ।

वृद्ध ने कहा ''बेटे, तुम यहाँ छोड़कर जा रहे हो, प्रत्येक पुत्र के लिए एक शिक्षा (सबक) और प्रत्येक पिता के लिए उम्मीद (आशा) ।

दोस्तो आमतौर पर हम लोग अपने वृद्ध माता–पिता को अपने साथ बाहर ले जाना पसंद नहीं करते और कहते हैं। क्या करोगे आप से चला तो जाता नहीं और ना ठीक से खाया जाता आप तो घर पर ही रहो वही अच्छा होगा।

हम यह भूल जाते हैं कि जब हम छोटे थे तो हमारे माता पिता हमें गोद में उठाकर ले जाया करते थे। जब हम ठीक से खाना खा नहीं पाते थे तो माँ अपने हाथों से खाना खिलाती थी और खाना गिर जाने पर डाँटती नहीं प्यार जताती थी।

फिर वही माता–पिता बुढ़ापे में बोझ क्यों लगने लगते ? माता–पिता भगवान का रूप है उनकी सेवा करें व उनको प्यार दें।

क्योंकि एक दिन हम भी बूढ़े होंगे तब अपने बच्चों से सेवा की उम्मीद कैसे करेगें।

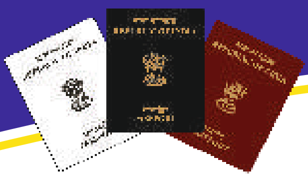

निरन्तर प्रयत्न

सोनी बिष्ट
पुत्री गिरीश चन्द्र बिष्ट
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

एक गाँव में एक मूर्तिकार रहा करता था। वो काफी खूबसूरत मूर्तियाँ बनाया करता था और इस काम से वो अच्छा कमा लिया करता था। उसे एक बेटा हुआ उस बच्चे ने बचपन से ही मूर्तियाँ बनानी शुरू कर दी, बेटा भी बहुत सुन्दर मूर्तियाँ बनाया करता था और पिता अपने बेटे की कॉमयाबी पर खुश हुआ करता था। लेकिन हर बार बेटे के काम में कोई ना कोई कमी निकाल देता था। वो कहता! बहुत अच्छा किया पर अगली बार इस कमी को दूर करने का प्रयास करना। बेटा भी कोई शिकायत नहीं करता था और अपने पिता की सलाह पर अमल करते हुए अपनी मूतियों को और बेहतर करता रहा । इस लगातार सुधार की वजह से बेटे की मूर्तियाँ पिता से भी अच्छी बनने लगी और ऐसा समय भी आ गया कि लोग बेटे की मूर्तियों को बहुत पैसा देकर खरीदने लगे ।

जबकि पिता की मूर्तियाँ उसके पहले वाली कीमत पर ही बिकती रहीं पिता अब भी बेटे की मूर्तियों पर कमी निकाल ही देता था लेकिन बेटे को अब ये अच्छा नहीं लगता था और वो बिना मन के उन कमियों को स्वीकार करता था लेकिन फिर भी अपनी मूर्तियों में सुधार कर ही देता था। एक समय ऐसा भी आया कि बेटे के सब्र ने जवाब दे दिया पिता जब कमियां निकाल रहे थे तब बेटे ने कहा! आप तो ऐसे कहते है, जैसे आप बहुत बड़े मूर्तिकार हैं। अगर आपको इतनी ही समझ होती तो आपकी मूर्ति इतनी कम कीमत पर नहीं बिकती, मुझे नहीं लगता कि मुझे आपकी सलाह लेने की जरूरत है। मेरी मूर्तियाँ परफेक्ट हैं ।

पिता ने बेटे की ये बात सुनी तो पिता ने बेटे को सलाह देना और उसकी मूर्तियों में कमी निकालना छोड़ दिया।

कुछ महीने तो वो लड़का खुश रहा लेकिन फिर उसने ध्यान दिया कि लोग अब उसकी मूर्तियों की उतनी तारीफ नहीं करते जितनी पहले किया करते थे और उसकी मूर्तियों के दाम बढ़ना भी बंद हो गए । शुरू में तो बेटे को कुछ समझ नहीं आया लेकिन फिर वो अपने पिता के पास गया और उन्हें इस समस्या के बारे में बताया । पिता ने बेटे को बहुत शान्ति से सुना जैसे कि उसे पता था कि एक दिन ऐसा जरूर आएगा। बेटे ने भी इस बात को गौर किया और बोला– क्या आप जानते थे कि ऐसा भी होने वाला है। पिता ने कहा– हाँ–क्योंकि आज से कई साल पहले मैं भी इस हालात से टकराया था। फिर बेटे ने सवाल किया फिर आपने मुझे समझाया क्यों नहीं ?
पिता ने जवाब दिया– क्योंकि तुम समझना नहीं चाहते थे। मैं जानता हूँ कि तुम्हारी जितनी अच्छी मूर्तियाँ मैं नहीं बनाता हूँ। ये भी हो सकता है कि तुम्हारे बारे में मेरी सलाह गलत हो और ऐसा भी नहीं है कि मेरी सलाह की वजह से तुम्हारी मूर्तियाँ बेहतर बनी हो लेकिन मैं जब तुम्हारी मूर्तियों में कमी निकालता था तब तुम अपनी बनायी मूर्तियों से सन्तुष्ट नहीं होते थे और तुम खुद को बेहतर करने की कोशिश करते थे और वहीं बेहतर होने की कोशिश तुम्हारी कामयाबी का कारण था। लेकिन जिस दिन तुम अपने काम से सन्तुष्ट हो गए और तुमने यह भी मान लिया कि इसमें और अधिक बेहतर होने की गुंजाइश ही नहीं है तब तुम्हारी ग्रोथ भी वही से रुक गयी और लोग हमेशा तुमसे बेहतर की उम्मीद रखते हैं। यही कारण है कि लोग अब तुम्हारी मूर्ति की उतनी तारीफ नहीं करते न ही तुम्हें उसके लिए ज्यादा पैसे मिलते हैं।

बेटा थोड़ी देर चुप रहा फिर उसने सवाल किया । तो अब मुझे क्या करना चाहिए ? पिता ने एक लाइन में जवाब दिया – असंतुष्ट होना सीख लो । मान लो कि तुममे हमेशा और अधिक बेहतरीन होने की गुंजाइश बाकी है। यही एक बात तुम्हें हमेशा बेहतरीन और अधिक आगे बढ़ने को प्रेरित करेगी।

माँ-बाप

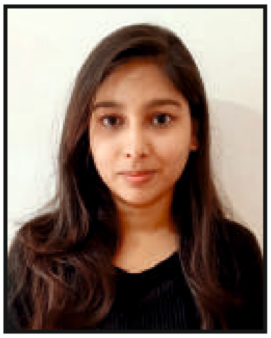

डा0 सोनल
पुत्री नरेन्द्र कुमार,
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

जिनके बारे में लिख रही हूँ शब्द भी कम हैं।
क्या लिखूं क्या बताऊं मेरी आँखें भी नम हैं,
सात जन्म भी ना उतरे जो इनका मुझ पे कर्ज है
इनको खुश रखना बस अब मेरा फर्ज है,
मेरे सपनों की खातिर, क्या कुछ नही छोड़ा है
लोगों का समाज का सबका मुंह तोड़ा है
लड़की हूं मैं, पर ना कराया कभी एहसास है
मेरे भाई से भी ज्यादा मुझे रखते दिल के पास है
मैने जो भी मांगा लाए हैं सारे शौक किए हैं पूरे
अपने सपनों का गला घोट छोड़ दिए अधूरे
ये ही हैं अल्लाह ये ही हैं ईसा और ये ही राम हैं
क्यों जाते हैं मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा जब घर पे ही भगवान हैं
अगले जन्म में मुझे यही घर और राम का ही जाप मिले
कुछ मिले या न मिले बस, यही मां और यही बाप मिलें!!

उड़ी जब चिरैया

जब बिटिया घर आई,
चेहरे पर सबके खुशी आई ।
सबने दीपावली मनायी
थोड़ी बड़ी हुई तो यह चिन्ता सताई बिटिया हमारी सयानी हो आई
न यहाँ आना, न वहाँ जाना,
सबने उसकी आज़ादी पर बंदिश लगाई ।
उसे तो छूना था आसमाँ मगर
जहाँ ने उसकी खुशियों पर नजर लगाई।
हौसला था पास उसके,
उसने दुनिया से टकराने की हिम्मत जुटाई।

सबने कोशिश की , काट डालें हम पंख उसके,
मगर वो उड़ी ऐसी कि, दुनिया के हाथ न आई ।
हासिल कर अपना मुकाम,
वापिस जब वो अपने घर आयी।

उस दिन सब ने फिर दिवाली मनाई
देखकर बेटी का जज्बा आज कहते हैं।
हम ने नहीं बेटी ने जन्नत दिखाई।

साक्षी सक्सेना
पुत्री मीरा सक्सेना
सहायक अधीक्षक

नन्ही ख्वाहिश

विनय चन्द्र
सहायक अधीक्षक

सुबह से शाम तलक
एक भीड़ उमड़ती है
आफिस में....
उमड़ी
इस भीड़ के
हर दूसरे शख्स को मुल्क के पार जाना है
हवाई रास्तों में बिछे
बादलों पर पाँव रखे यह जमीनी लोग
परवाज चाहते है
और
ऑफिस में बैठा बैठा मैं
उँगलियों के पोरों पर रोज चढ़ाता उतारता रहता हूँ दुनिया के तमाम मुल्क,
और अर्जियों की चर्खियों पर चढ़ी डोर को
ढील देकर
कागजी ख्वाब उड़ाता हूँ
कभी लंदन,
कभी पेरिस,
और कभी कभी अमेरिका,
और अपने अपने अंगूठे के निशानों की
जमानतों पर
सपनों के सफर पर निकले हुए
लोगों के ब्रीफकेसों में
यूँ ही
चुपके से रख देता हूँ
एक नन्ही सी ख्वाहिश
इस उम्मीद से
कि कभी ना कभी किसी रोज
उन अटैचियों के तंग दायरों से
सरक कर,
वो ख्वाहिश, जा पहुंचेगी
ऊंची
आइफिल टावर से भी ऊँची,
स्टेच्यू आफ लिबर्टी के घेरे से बाहर,
और चीन की लम्बी दीवार पर
चढ़कर.
कंधों का सहारा देगी
झुकी पीठ वाली
पीसा की मीनार को

जीवन एक संघर्ष है

जीवन एक संघर्ष है पार्थ इसको पहचान सही
ना हो निराश कभी, इस सांसरिक जीवन में
भू, नीर, दिवाकर, जन मन और तन लगे
हुए नियति के विचरण में
जीवन एक संघर्ष है पार्थ इसको पहचान सही
हो कभी असफलता का सामना, धीरज न खोना
देख सवेरा फिर होगा, नभ से उदय दिवाकर फिर होगा
उसके बल को पहचान सही,
जीवन एक संघर्ष है पार्थ इसको पहचान सही
देर लगेगी मगर सही होगा हमें जो चाहिए वही होगा,
दिन बुरे है जिंदगी नहीं, कर्म का संताप नहीं,
देख कसौटी फिर होगी कर सुख को तैयार सही
जीवन एक संघर्ष है पार्थ इसको पहचान सही।

धर्मवीर सिंह
वरिष्ठ अधीक्षक

पश्चाताप

मोहम्मद आतिर अंसारी
कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक

रमेश ऑफिस से लौटकर आया ही था कि उसकी पत्नी सुनीता ने बोलना शुरू कर दिया जो उसकी रोज़ की दिनचर्या थी। रमेश का अधिकांश समय ऑफिस में व्यतीत होता था जबकि सुनीता को सारा दिन अपने घर पर ही रहना होता था। उसे अपनी सास को झेलना पड़ता था वह अपनी सास को एक आंख ना देखती थी उसके लिए उसके परिवार की सबसे बड़ी समस्या उसकी सास ही थी। इसी कारण उनमें सदैव नोकझोंक होती रहती थी लेकिन आज तो सुनीता कुछ ज्यादा ही भड़क रही थी क्योंकि उसकी सास ने सुनीता की पसंदीदा साड़ी की इस्त्री करके उसको जला दिया था जिसे पहनकर वो आज अपने मायके जाने वाली थी। वह इंतजार ही कर रही थी कि रमेश कब ऑफिस से आए और वह उसे बुढ़िया की करतूत सुनाए।

बुढ़िया के कारण अब तो जीना भी दूभर हो गया है रात भर खाँसती रहती है न सोती है न सोने देती है और खाने में कोई कमी नहीं छोड़ती है अगर परेशानी होती है तो रात में खाना ना खाया करें मगर नहीं खाना दिन भर में चार बार खाती है। बच्चों को अपने पास बुला लेती हैं तो मुझे डर लगता है कि कहीं उनकी बीमारी बच्चों को न लग जाए। अब बस बहुत हो गया था अब तो इस घर में बुढ़िया रहेगी या मैं। मरती भी तो नहीं है, गले की हड्डी बन कर रह गई है। बेटा भी सुनीता के साथ मिलकर मां को उल्टी–सीधी सुनाने लगता ।

जब वह लोग बूढ़ी औरत को ज्यादा परेशान रखने लगे तो वह मानसिक और शारीरिक दोनों प्रकार से बीमार रहने लगी जिस कारण उसकी हालत दिन प्रतिदिन गिरती जा रही थी और उसके बहू–बेटे उसकी बिल्कुल भी खबर न लेते थे। न उसके खाने का ध्यान न दवा का। इन सभी स्थितियों ने बुढ़िया के मन को बहुत दु:खी कर दिया वह मन ही मन में रोती थी और फिर एक दिन बुढ़िया के मन में विचार आया कि जब उसके बहू बेटे उसकी परवाह ही नहीं करते तो फिर अपनी संपत्ति उनको क्यों देकर जाए? उसने एक वकील को बुलाकर अपनी संपत्ति आश्रम को दान करने की योजना बनाई जब यह बात उसके बहू–बेटों को पता लगी तो उन्हें अपनी मां के प्रति किए गए व्यवहार पर पश्चाताप होने लगा और वे तभी से उनको प्रसन्न रखने का हर संभव प्रयास करने लगे।

मैं न रहूँगा तुम तो होगे

यह परिवेश बदल जाएगा, मैं ना रहूंगा तुम तो होगे।
समय का जादू चल जाएगा, मैं ना रहूंगा तुम तो होगे।।
कामी क्रोधी या अभिमानी, कर्मवीर ज्ञानी–अज्ञानी।
आज नहीं तो कल जाएगा, मैं ना रहूंगा तुम तो होगे।।
तुम जिसको समझे हो कंचन पलक झपकते बने अकिंचन।
उगता सूरज ढल जाएगा, मैं ना रहूंगा तुम तो होगे।।
मन तो मन है आँच आगे तो, तुम जिसको कहते हो पत्थर।
मन का बनकर मोम पिघल जाएगा, मैं ना रहूंगा तुम तो होगे।।
जब अच्छा ही नहीं रहा तो, इतना निश्चित जानो प्यारे।
बुरा समय भी टल जाएगा, मैं ना रहूंगा तुम तो होगे।।
मनीष बुरा है किंतु एक पल, देख नैन से नैन मिला कर।
गिरता हुआ समझ जाएगा, मैं ना रहूंगा तुम तो होगे।।

मनीष शर्मा (M.T.S.)

दिव्या पाल
पुत्री विमला देवी
कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक

खग, उड़ते रहना

खग, उड़ते रहना जीवन भर !
भूल गया है तू अपना पथ और नहीं पंखों में भी गीत
किन्तु लौटना पीछे पथ पर, अरे! मौत से भी है बदतर
खग, उड़ते रहना जीवन भर
मत डर प्रलय-झकोरों से तू बढ़
आशा-हलकोरों से तू,
क्षण में अरि-दल मिट जाएगा तेरे
पंखों से पिसकर
खग, उड़ते रहना जीवन भर!
यदि तू लौट पड़ेगा थककर, अधंड़ काल-बवंडर से डर
प्यार तुझे करने वाले ही, देखेगें तुझको हँस-हँसकर
खग, उड़ते रहना जीवन भर!
और मिट गया चलते-चलते, मंजिल पथ तय करते-करते
खग चढ़ाएगा जग,
उन्नत भाल और आँखों पर
खग, उड़ते रहना जीवन भर!

सविता भास्कर
पुत्री डाल चन्द
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

नारी का समाज में स्थान

नारी को क्यों कर नहीं, मिला जगत में मान।
इसका कारण मुख्य ही, अनपढ़ होना जान।।
अनपढ़ होना जान, कि वह पुरुषों के सहारे रहती।
इसलिए रोजगार नौकरी भी ना कर सकती।।
जिनके माता-पिता ने, दीना फर्ज निभाय।
पुत्र-पुत्री दोउ को, शिक्षा दई दिलाय।।
शिक्षा दई दिलाय, उसी पुत्री का जन्म धन्य है।
रोजगार मिला, सुखचैन मिला वही जग में आज धन्य है।।
शिक्षा से भरपूर हो, उन्नति पाती जाए।
पराधीनता त्याग कर धन, सुख, वैभव पाए।।
धन सुख वैभव पाय, स्वावलम्बी तब वे बन जावे।
उनके माता-पिता दहेज से, पीड़ित ना हो पावें।।
नारी के उत्थान हित, शासन ध्यान लगाय।
बालिका शिक्षा को तभी, दीना और बढ़ाए।।
दीना और बढ़ाए, उन्हें पुस्तकें नि:शुल्क बँटवायी।
छात्रवृत्ति को पाकर उनमें लहर खुशी की आयी।।
यू.पी. की सरकार ने, कन्या धन बँटवाय।
निर्धन कन्या वर्ग की, कीनी खूब सहाय।।
कीनी खूब सहाय, की निर्धन कन्याएँ पढ़ जावे।
खुद भी शिक्षा पाय सभी, सन्तानों को पढ़वावे।।

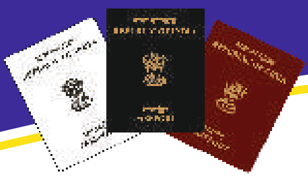

अनुराग दुबे 'अंशुल'
पूर्व कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक

राम लौट कब आओगे

तुम बिन सूनी हुई अयोध्या, हे राम लौट कब आओगे?
इस व्याकुल भूमि को अपने दरश कब दिखलाओगे?
क्या तुमको है प्रेम नहीं अब, अपनी इन संतानों से?
चौदह बरस गए थे लेकर सांस हमारे प्राणों से
तुम बिन नदियां सूख गयीं हैं, कब इनकी प्यास बुझाओगे?
तुम बिन सूनी हुई अयोध्या, हे राम लौट कब आओगे?
गलती थी जाने किसकी वो, सज़ा सभी ने पाई थी।
रघुकुल के दीपक की बाती, वन को क्यों भिजवायी थी?
घनघोर अँधेरी रातों को, कब पूनम चाँद दिखाओगे?
तुम बिन सूनी हुई अयोध्या, हे राम लौट कब आओगे?
इस व्याकुल भूमि को अपने दरश कब दिखलाओगे?
तुम ही तो हो अंतर्यामी, देखा न इन आँखों का पानी ?
तुम ही तो हो पालनहारा, तुम्हें दर्द न दिखा हमारा?
इन रुके हृदयों में कैसे, अब धड़कन लौटाओगे?
तुम बिन सूनी हुई अयोध्या, हे राम लौट कब आओगे?
देखो ज़रा तुम्हारे बिन, न होली न दीवाली है।
देखो ज़रा तुम्हारे बिन, न इक घर में खुशहाली है।
इन मुरझाये अधरों की तुम, कब मुस्कानें लौटाओगे?
तुम बिन सूनी हुई अयोध्या, हे राम लौट कब आओगे?
चौदह बरस हुए तब से, न उपवन में कोई फूल खिला
कोई पक्षी न चहका तब से, पेड़ों पर न फल निकला
तुम बिन मौसम पतझड़ सारे, कब सावन बरसाओगे?
तुम बिन सूनी हुई अयोध्या, हे राम लौट कब आओगे?
इस व्याकुल भूमि को अपने, दरश कब दिखलाओगे?

शिक्षा का महत्व

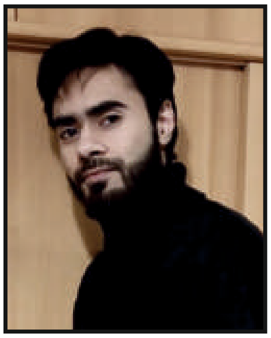

मोहम्मद सैफ
पुत्र श्री मोहम्मद नसीम
पासपोर्ट अधिकारी, बरेली

शिक्षा हर इंसान की मौलिक आवश्यकता है चाहे वह अमीर हो या गरीब पुरुष हो या महिला यह एक मानव अधिकार है इस अधिकार को कोई छीन नहीं सकता, शिक्षा वह आभूषण है जो मनुष्य के चरित्र को सुशोभित करती है। शिक्षा वह धन है जो बांटने से कम नहीं होता, इसे जितना बांटोगे उतना ही यह बढ़ेगी शिक्षा जीवन का महत्वपूर्ण अंग है जो बचपन से लेकर वृद्धावस्था तक हमें संयमित और प्रगतिशील बनाए रखती है शिक्षा से मनन-शक्ति, चेतना, विचार शीलता और ज्ञान की प्राप्ति होती है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र या समाज के विकास की गारंटी है।

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ है ज्ञानार्जन, यह शिक्षा ही है जो मनुष्य को पशुओं से अलग करती है, पशुओं के अंदर एक स्वाभाविक ज्ञान दिया गया है हालांकि मनुष्यों में उससे कहीं अधिक ज्ञान को अर्जित करने की क्षमता है, परंतु यह ज्ञान उसे हासिल करना पड़ता है। उदाहरण के लिए एक पशु रेगिस्तान में जन्मा हो और उसने पानी का तालाब तक ना देखा हो परंतु जब भी उसे नदी में छोड़ा जाए, तो वह तैरने लगता है जबकि मनुष्य के साथ ऐसा नहीं है, एक नाविक के बेटे को तैरना सीखना पड़ेगा।

जीवन की अन्य जरूरतों की अपेक्षा शिक्षा के महत्व को गांधी जी ने इस तरह समझाया है कि ऐसे जियो जैसे तुम्हें कल मरना है लेकिन ऐसे पढ़ो जैसे तुम्हें हमेशा जिंदा रहना है। एक बहुत मशहूर चीनी कहावत है कि अगर आप 1 साल की प्लानिंग कर रहे हैं तो चावल उगाइये, अगर आप 10 साल की प्लानिंग कर रहे हैं तो पेड़ लगाइए और अगर आप पूरी जिंदगी की प्लानिंग कर रहे हैं तो लोगों को शिक्षित करिए। नेल्सन मंडेला का कथन है, कि शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिससे आप पूरी दुनिया को बदल सकते हैं।

शिक्षा एक प्रकाश है जो तरक्की और उर्जा को लेकर आता है जबकि अशिक्षा एक अंधकार है जो दासता को लेकर आता है, जी हां, एक अशिक्षित व्यक्ति परोक्ष रूप से गुलाम है। इतिहास गवाह है की गुलामों के जो मालिक थे उन्होंने शिक्षा को गुलामी प्रथा के लिए एक खतरा समझा और यह माना कि गुलामों को शिक्षा देने से उनके अंदर एक चेतना, ऊर्जा और स्वयं को गुलामी से आजाद कराने की जद्दोजहद पैदा होती है और वह गुलामी के खिलाफ मालिकों से बगावत पर उतर आते हैं।

हर धर्म में शिक्षा प्राप्त करने का अपना महत्व है, जब इस्लाम के आखरी पैगम्बर हजरत मुहम्मद (स.अ.व) पर अल्लाह की तरफ से संदेश आया और कुरान पाक की पहली आयत उतरी तो उसका सबसे पहला शब्द था 'इकरा' यानी पढ़ो। मानव स्वभाव के साथ अपनी संगतता के कारण इस्लाम में भी ज्ञान प्राप्त करने को प्रोत्साहित किया है। इस्लाम के शुरुआती दौर में केवल वे गुलाम, जो पढ़ना और लिखना जानते थे, उन्हें बिना भुगतान के रिहा कर दिया जाता और उन्हें दस बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने का आदेश दिया जाता था।

शिक्षा प्राप्त करने का मतलब केवल स्कूल, कॉलेज या विश्वविद्यालय से डिग्री प्राप्त करना नहीं है, बल्कि शिक्षा द्वारा बालक की अंतर्निहित शक्तियों का विकास और चरित्र निर्माण होता है जिससे वह देश और समाज का सुयोग्य नागरिक बनता है। शिक्षा और नौकरी का वास्तव में अपने आप में कोई सीधा संबंध नहीं है, यद्यपि शिक्षा प्राप्त व्यक्ति को नौकरी अशिक्षित व्यक्ति की अपेक्षा कहीं अधिक आसानी से मिल जाती है। शिक्षा का सीधा और वास्तविक संबंध व्यक्ति के मन, मस्तिष्क, आत्मा और व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास के साथ होता है। इसके विपरीत नौकरी, आदमी अपनी जीविका चलाने और अन्य भौतिक आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए करता है। यदि हम वर्तमान स्थिति को देखें तो यह अनुभव होगा कि शिक्षण पेशा प्रदूषित हो गया है। ज्ञान का उद्देश्य मनुष्य का निर्माण करना था। किन्तु आज की शिक्षा अंक और अंकपत्रों पर आधारित, केवल अच्छी नौकरी पाने के उद्देश्य से प्राप्त की जाती है।

वर्तमान युवा पीढ़ी के माता–पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त करें और समाज में उनका एक अच्छा मुकाम हो परंतु दुर्भाग्य से ऐसा सपोर्ट सिस्टम उपलब्ध नहीं है जो बच्चों को विशेषकर उन बच्चों को जिनकी पृष्ठभूमि गरीब व पिछड़ी है को अच्छी व नि:शुल्क शिक्षा उपलब्ध कराये। एक समस्या यह भी है कि ग्रामीण इलाकों में युवाओं के लिए केरियर के अवसर हेतु कोई मार्गदर्शन प्रणाली नहीं है जिससे कि गरीब बच्चे उसका लाभ ले सकें और अपने कैरियर की प्लानिंग कर सकें।

ग्रामीण एवं पिछड़े इलाकों में ऐसी शिक्षण संस्थाओं का अभाव है जहां इंटरमीडिएट पास करने के बाद बच्चों को प्रोफेशनल व उच्च शिक्षा के लिए आसानी से प्रवेश मिल सके जैसा कि सर्वविदित है कि प्रत्येक वर्ष उच्च शिक्षा व नौकरी कि लिए प्रतियोगिताएं और अधिक कठिन व दुर्लभ होती जा रही हैं हमारे देश में बेरोजगारी की गंभीर समस्या तो है ही साथ ही छुपी बेरोजगारी की स्थिति भी विकट है छुपी हुई बेरोजगारी का मतलब है कि हर किसी को उसकी शिक्षा और योग्यता के अनुसार नौकरी ना मिलना, परिणाम स्वरूप हमारे देश से बहुत से योग्य युवा विदेशों में अच्छे अवसर पाने कि लिए चले जाते हैं जिसे ब्रेन ड्रेन कहा जाता है।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 21 में कहा गया है कि ''किसी भी व्यक्ति को विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अतिरिक्त, उसके जीवन और वैयक्तिक स्वतंत्रता के अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता है'' इस प्रकार, अनुच्छेद 21 दो अधिकारों को सुरक्षित करता है।एक जीवन का अधिकार, और दूसरा व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार, जिसमें शिक्षा के अधिकार भी शामिल है, क्योंकि बिना शिक्षा के व्यक्ति की स्वतंत्रता बेमानी है, शिक्षा के अधिकार को और अधिक महत्व देने हेतु संविधान में संशोधन के द्वारा अनुच्छेद 21–ए को शामिल किया गया है। अनुच्छेद 21–ए शिक्षा को मौलिक अधिकार के रूप में छह से चौदह वर्ष के आयु समूह में सभी बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान करता है। हमारे संविधान में शिक्षा का विषय समवर्ती लिस्ट में है अर्थात केंद्र सरकार और राज्य सरकारें दोनों ही उस पर कानून बना सकती है, अत: सरकारों से अपेक्षा की जाती है कि वह शिक्षा को सर्वोत्तम वरीयता देते हुए सभी युवाओं को अच्छी, निशुल्क और रोजगार परक शिक्षा सुलभ कराए। हमें भी शिक्षा को उसके सही उद्देश्य के साथ प्राप्त करना चाहिए और उसका सही उपयोग करना चाहिए और यदि ऐसा हो सके तो वह दिन दूर नहीं जब हम दुनिया के विकसित देशों में अग्रणी भूमिका निभाएंगे।

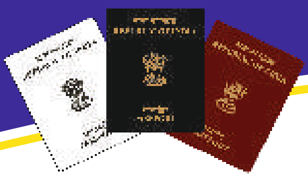

आखिर कैसी है वो

भोलीभाली है, फूलों सी कोमल है, दीवारों सी शांत है और थोड़ी नादान है वो
वो पर्वतों सी ऊंची नदियों सी बहती और हवा सी गुनगुनाती मेरी जान है वो,
उसकी जुल्फों से छूकर सावन निकलते है
उसके हँसने, उसके चलने, उसके देखने में सबके दिल मचलते हैं।
खुले बाल, लाल लाली और माथे पे छोटी सी बिंदी,
जैसे नदियों से बहकर सीप से मोती निकलते हैं।
वो अपने ख्वाबों के झूले में दिन भर झूलती हैं वो अपने गालों को लाल तकिए पे रात भर घिसलती है
उसकी उंगलियों की नर्मियां, उसके बालों की उलझने किसी मखमली सी चादर पर मोती के जैसी फिसलती हैं।
वो जिससे नज़र मिला ले तो उसे परियों की याद आ जाए,
वो जिससे बात कर ले तो तो टिण्डे में भी स्वाद आ जाए।
शर्म का गहना पहनती है वो, मर्यादा का चूनर डालती है,
वो हर पल अपनी पलकों में एक राजकुमार के ख्वाब पालती है।
साड़ी पहनती है तो अनछुई सी दुल्हन सी नजर आती है,
वो जब भी मुस्कुराती है सबके बेहोश होने की ख़बर आती है
जरा सा बोल दे तो लफ़्ज मुकम्मल हो जाए,
उसके चेहरे की रौनक से धूप भी शरमाये।
वो सुख के पलों को मस्ती में और दुख के पलों को इत्मीनान से काटती है।
किसी के दु:खों को बैठकर बँटाती है और अपने सुख को सबके साथ बांटती है।
अपनी दादी की प्यारी, बहनों की जान है वो अपनी मम्मी का मान, और पापा शान है वो
अपने सपनों के राजकुमार का मीठा पान है वो,
उलझी हुई कहानियों की सुलझी सी दास्तान है वो,
कुछ भी कहो वो चाँद सी शरमाती, हीरे सी जगमगाती मेरी जान है वो।

खुद के ऊंचे हौंसलों की उड़ान है वो।
बड़ों के आदर्शो का गुणगान है वो।

एक अजीब सी कल के सपनों को लेकर परेशान है वो,
हाँ वो अपने पापा की परी है और उनका आत्मसम्मान है वो।

भोलीभाली है, फूलों सी कोमल है, दीवारों सी शांत है और थोड़ी नादान है वो
वो पर्वतों सी ऊंची नदियों सी बहती और हवा सी गुनगुनाती मेरी जान है वो।

सुमित कुमार
पूर्व कनिष्ठ पासपोर्ट सहायक

सलामी तुमको ऐ शहीदो

अब्दुल समद
पुत्र श्री अलीम हुसैन
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

मेरे देश को फूलों से सजाने वालों
इस देश को एक चमन बनाने वालों,
इस तिरंगे को सीने से लगाने वालों,

सलामी तुमको ए शहीदो
सलामी तुमको ए शहीदो

हर एक फिज़ा को एक रंग बनाने वालों,
हर सदा पर अपनी सदा लगाने वालों,
मिल कर मिट्टी में, कफन खुद पर सजाने वालों,

सलामी तुमको ए शहीदो
सलामी तुमको ए शहीदो

तुम जो चलते हो तो फूलों का चमन चलता है
तुम्हारे दम से हमारा यह वतन पलता है।

तुम जो सलामत हो तो सलामत है वतन,
वरना हर रात है भयाबक सी घुटन।

तुमने जो सर पे कफन अपने सजा रखा है,
सच तो ये है कि हमें तुमने बचा रखा है।

तुझको सलाम ऐ शहीदे वतन,
तुझसे कायम है वतन-तुझसे कायम है वतन।।

दाँतों की स्वच्छता

हरीश कुमार
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

कर दातुन दाँत हो पैने
बदबू मिटे गिलानी
रहे चमकते मोती जैसे
शक्ति बढ़े चवानी
दाँतों बिना जीवन लगे अधूरा
दाँतों बिना स्वाद लगे अधूरा

सफर-ए-जिदंगी

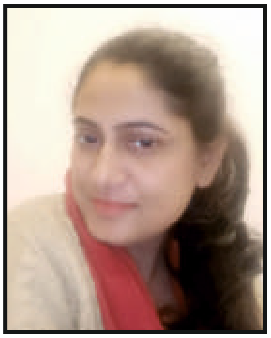

नगमा बी
डाटा इन्ट्री ऑपरेटर

Birth से Death तक का सफर ही तो है जिंदगी,
चलो देखते हैं ये कैसे गुजरता है।
जो पैदा हुआ है यकीनन एक दिन मरता है,
फिर मौत से तू क्यों डरता है।
किसी के साथ कोई मरता नहीं,
और जो किसी के लिए अपनी जान दे,
वह शायद खुदा से डरता नहीं,
और खुद से भी प्यार करता नहीं।
सफर में बहुत से लोग मिलेंगे,
कुछ लोग जा चुके हैं, कल से आने वाले
हर पल में साथ देंगे,
शायद कुछ कल थे, या आज में आने
वाले कल नहीं रहेगें।
कोई गिला नहीं कोई शिकवा नहीं,
साथ हो तो ठीक है अगर नही तो न सही,
मंजिल मिल जाए तो कामयाबी धूम मचाती है,
उस मंजिल के कितने आशिक़ थे उनको तो
मानो जैसे भूल ही जाती है,
यूं ही गुजर रहा है जिंदगी का हर लम्हा,
कोई खुश है और कोई यूँ ही तन्हा।
कौन जाने किसका सफर कहां से शुरू हुआ
और कहां तक जाएगा।
मुसाफिर को रास्ता मिला या अब भी भटक ही रहा,
मंजिल जो चाहिए वही मिली या कहीं और ठहर गया।
ठहरना खुशी थी या कोई और ही वजह
ये जिंदगी है मेरे यार, जिसके रंग हजार,
हर कोई दौड़ रहा है, रोशनी की तलाश में
खुशियों की आस में,
मंज़िल शायद बहुत खूबसूरत है इस अहसास में,
यहाँ किसी का ठिकाना कहाँ, हर कोई
मुसाफिर ही तो है यहाँ।
कोई आया है कोई आयेगा और कोई कर चला गया,
उनका किस्सा भी सुनाया जाएगा
Birth से Death तक का सफर ही तो है जिंदगी
चलो देखते हैं ये सफर कैसे गुज़रता है

श्रीमती अरशी
डाटा इन्ट्री ऑपरेटर

जीवन एक संघर्ष है

क्या असली क्या नकली, कुछ पता नही,
नाच रही कठपुतली, कुछ पता नही।
अपनी-अपनी ढफ़ली, अपना-अपना राग,
किसकी जीत किसकी हार, कुछ पता नही।
मेहनत से दो वक्त की रोटी मिल ही जाएगी,
माया मोह का यह कैसा जाल, कुछ पता नही।
सब तो है रोजी-रोटी के चक्कर में,
किस की टोपी उछली, कुछ पता नही।
लालच के भंवर में है यह दुनिया फँसी,
भूले अगली पिछली कुछ पता नही।
ख्वाहिश तो आसमां की बुलंदियों की है,
पर कैसे उड़ें, कुछ पता नही।
हौसला तो समुंदर उबूर करने का है,
कश्ती भंवर में है, हवाओं के रुख का पता नही।
यह अरमानों की उड़ान, यह ला महदूद आरजुएं,
यह महंगे ख्वाब, ताबीर का पता नही।
लंबा है सफर सूनी है डगर,
रात है अंधेरी, मंजिल का पता नही।

भागमल सिंह
वरिष्ठ पासपोर्ट सहायक

हिन्दी का उद्धार है

हिन्दी के इस पखवाड़े में, हमने हाथ बढ़ाया है।
हिन्दी जीवित रहे हमेशा, यह सवाल उठाया है।
इस अमृत आजादी में भी, हिन्दी पर्व मनाया है।
पखवाड़े के अन्दर हमने, कैसे सभी को लुभाया है।
लोभ नहीं प्रलोभन है, हिन्दी सबको आती है।
शैली इसकी अच्छी है, इसीलिए तो भाती है।
भाने की तो बात ठीक है, पर इंग्लिश टांग अड़ाती है।
सुन्दर सरल होने के कारण, हिन्दी ही बढ़ जाती है।
भारतेंदु, महादेवी वर्मा, सबने इसका साथ दिया।
मुंशी प्रेमचंद जी ने भी, हिन्दी का गुणगान किया।
इनके तो जीवन पर बीती, पर तेरा श्रृंगार हो गया।
तुमने अब निहारा अपना, हिन्दी का उद्धार हो गया।
मौन क्षणों की मीठी भाषा, शब्द रहित कैसी परिभाषा।
कानों में कह गयी वो, कर बैठी मुखरित अभिलाषा।
तेरा सर उठा जज्बे से, मैं समझा अधिकार हो गया।
तुमने अब निहारा अपना, हिन्दी का उद्धार हो गया।
शीतलता बसती चन्दन में, धूप रहा करती आँगन में।
फूल खिला करते उपवन में, तुम तो जैसे रहती हो।
पलकें बंद करीं जो मैंने, तो तुमको अभिसार हो गया।
तुमने अब निहारा अपना, हिन्दी का उद्धार हो गया।
14 सितम्बर से शुरू हुई, साल हुआ उनचास (1949)
तब से लेकर आज तक, हुआ हिन्दी का विकास।

हँसना मना है....

(संकलन)

रिद्धि सिंह
पुत्री श्री दिनेश सिंह
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

यह तो अच्छा हुआ कि 1947 में whatsapp नहीं था..
वरना आजादी के लिए कोई जंग में उतरता ही नहीं...
लोग घर बैठे ही कहते कि..
इस मैसेज को इतना फैलाओं कि अंग्रेज खुद भारत छोड़कर भाग जाए...

ठंड इतनी बढ़ गई है कि जब रजाई से निकलता हूँ
तो रजाई गाने लगती है
मुझे छोड़कर जो तुम जाओगे बड़ा पछताओगे, बड़ा पछताओगे ।

गली से आवाज आई रू 400/- में जिंदगी भर बैठ कर खाइए..
बाहर निकल कर देखा तो कुर्सी बेच रहा था।

एक मच्छर परेशान बैठा हुआ था
दूसरे ने पूछा- भाई क्या हुआ तुझे
पहला बोला- यार गजब हो रहा है।
चूहादानी में चूहा, साबुनदानी में साबुन
मगर मच्छरदानी में आदमी सो रहा हैं।

हलवा पूरी होती है
भेल पूरी होती है।
खीर पूरी होती है
पानी पूरी होती है।
बस नींद ही पूरी नहीं होती है।

अकबर - सेनापति बताओ कि हम अनारकली को क्यों नहीं ढूंढ पा रहे हैं?
सेनापति - महाराज क्योंकि हम मुगल है, गूगल नहीं...

एक जमाना था जब मोबाइल गिरता था तो मोबाइल की बैटरी बाहर आ जाती थी
और आज..
मोबाइल हाथ से छूटते ही कलेजा, लीवर, किडनी, सब एक साथ बाहर आ जाते हैं

डॉक्टर बोला कि हल्का खाना
रास्ते में दुकान पर समोसे, जलेबी और पकोड़े कढ़ाई मे तैर रही थी
जब यह तैर रही है तो हल्के ही होंगी
तों मैंने इन सब की पूरी थाली लगवा ली।

देर से मच्छर शर्मा जी को परेशान कर रहे थे
शर्मा जी ऑल आउट पीकर वापस आए
और मच्छरों से बोले - अब काट कर दिखाओ, तुम में से एक भी नहीं बच पाएगा।

बाल कलाकार..

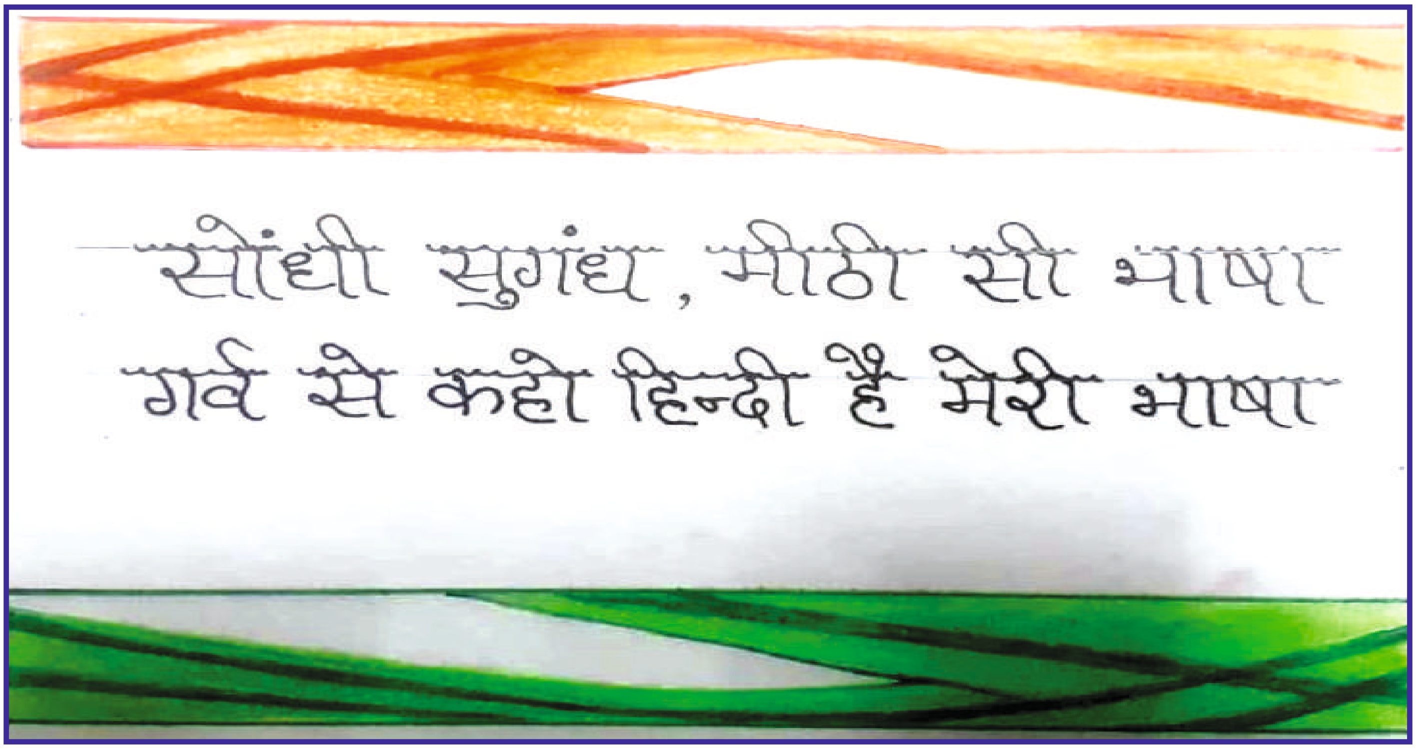

प्रणव कुमार
पुत्र श्रीमती सुमन सक्सेना
सहायक अधीक्षक

बाल कलाकार..

अभ्युदय सिंह
पुत्र श्री दिनेश सिंह
कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

प्रशस्ति-पत्र (नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बरेली द्वारा)

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

गृह मंत्रालय, (राजभाषा विभाग)

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बरेली।

प्रशस्ति-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि ......पासपोर्ट कार्यालय, बरेली...... ने

दिनांक 01.01.2021 से 30.06.2021 को समाप्त छमाही अवधि में उत्कृष्ट पत्रिका प्रकाशन का सराहनीय कार्य किया है। इस कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

दिनांक : 10.11.2021

(एन.एन. पाण्डेय)
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय मुख्य आयकर आयुक्त (आर.ई.एफ.ए.सी.), बरेली
एवं
सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बरेली

(जयंत डिड्डी)
मुख्य आयकर आयुक्त (आर.ई.एफ.ए.सी.), बरेली
एवं
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बरेली

प्रशस्ति-पत्र (नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बरेली द्वारा)

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
गृह मंत्रालय, (राजभाषा विभाग)
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बरेली।

प्रशस्ति-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि दिनांक 01.01.2021 से 30.06.2021 तक की अवधि के लिए राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग एवं कार्यान्वयन में कार्यालय ......पासपोर्ट कार्यालय, बरेली...... का कार्य बरेली नगर स्थित समस्त केन्द्र सरकार के कार्यालयों में ......तृतीय......स्थान पर रहा। इनके उल्लेखनीय कार्य की प्रशंसा की जाती है।

मुझे पूरा विश्वास है कि यह विभाग /संगठन भविष्य मे भी राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में उत्तरोत्तर प्रगति के पथ पर आगे बढ़ता रहेगा।

दिनांक : ..10.11.2021

(एन.एन. पाण्डेय)
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय मुख्य आयकर आयुक्त (आर.ई.एफ.ए.सी.), बरेली
एवं
सचिव, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बरेली

जयन्त डिड्डी
(जयंत डिड्डी)
मुख्य आयकर आयुक्त (आर.ई.एफ.ए.सी.), बरेली
एवं
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, बरेली

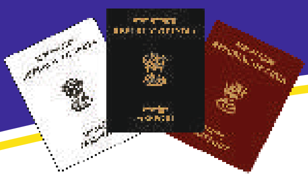

पासपोर्ट समाचार

भाषण में मिथुन, हिंदी लेखन में आतिर ने पाया पहला स्थान

बरेली। पासपोर्ट ऑफिस में हिंदी पखवाड़े में अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। पखवाड़े के समापन पर विजयी प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। हिंदी भाषण में मिथुन कुमार-प्रथम, धर्मवीर सिंह-द्वितीय, डालचंद-तृतीय, हिंदी लेखन और अनुवाद में मोहम्मद आतिर खां-प्रथम, कौशल सिंह-द्वितीय, लोकेश गौतम-तृतीय, सुलेख में श्रीश गौतम-प्रथम, सुमन सक्सेना-द्वितीय, गंगादत्त-तृतीय, काव्य पाठ में खीम सिंह-प्रथम, भागमल सिंह-द्वितीय और कैलाश प्रसाद तृतीय स्थान पर रहे। पुरस्कार वितरण समारोह पासपोर्ट ऑफिस सभागार में हुआ। कार्यक्रम में क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी नसीम अहमद, अतुल कुमार सक्सेना, पंकज अग्रवाल आदि उपस्थित रहे। संवाद

पासपोर्ट ऑफिस में हिंदी पखवाड़े में हुई प्रतियोगिताएं

राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य पर बरेली पासपोर्ट कार्यालय को पहला पुरस्कार

बरेली। विश्व हिंदी दिवस पर क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय बरेली को राजभाषा हिंदी के क्षेत्र में बेहतर कार्य करने पर प्रथम पुरस्कार के लिए चुना गया। इस उपलब्धि के बाद पासपोर्ट कार्यालय में समारोह का आयोजन किया गया।

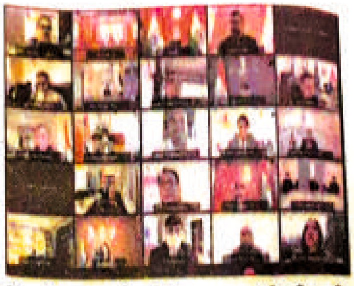

क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी मोहम्मद नसीम ने बताया कि विदेश राज्यमंत्री मीनाक्षी लेखी की अध्यक्षता में सोमवार को विश्व हिंदी दिवस पर ऑनलाइन कार्यक्रम हुआ जिसमें विदेश मंत्रालय के देश-विदेश में संचालित करीब 160 कार्यालयों ने भाग लिया। इसी कार्यक्रम में वर्ष 2021 में राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने पर क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय बरेली को प्रथम' पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा की गई। मोहम्मद नसीम के मुताबिक इस पुरस्कार की शुरूआत 2019 से हुई थी। पहली बार पासपोर्ट कार्यालय बरेली को यह पुरस्कार मिला है। इस उपलब्धि पर पासपोर्ट अधिकारी मोहम्मद नसीम ने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों की सराहना की। साथ राजभाषा में आगे और उत्कृष्ट काम करने पर जोर दिया। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ अधीक्षक अतुल सक्सेना, दिनेश सिंह समेत कार्यालय के सभी अधिकारी, कर्मचारी उपस्थित रहे। ब्यूरो

बिजनौर में पासपोर्ट ऑफिस का निर्माण शुरू स्थगित रहेंगी सेवाएं

बरेली। पोस्ट ऑफिस पासपोर्ट सेवा केंद्र बिजनौर में जर्जर भवन का पुनर्निर्माण शुरू होने से 25 नवंबर से सभी सेवाएं स्थगित कर दी जाएंगी। 25 नवंबर या उसके बाद बिजनौर ऑफिस में कार्यों के लिए आवेदन करने वालों को अपने अप्वाइंटमेंट रिशेड्यूल करने को कहा गया है। उन्हें बरेली कार्यालय के अधीन पासपोर्ट ऑफिस से सेवाएं लेने को कहा गया है।

क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी मोहम्मद नसीम की ओर से जारी सूचना के अनुसार बिजनौर के पासपोर्ट ऑफिस का निर्माण कार्य शुरू होने जा रहा है। 25 नवंबर से बिजनौर पासपोर्ट ऑफिस से सेवाएं नहीं दी जा सकेंगी। निर्माण कार्य पूरा होने के बाद फिर से संचालन शुरू हो जाएगा। निर्माण कार्य के दौरान बिजनौर के पासपोर्ट ऑफिस में पासपोर्ट संबंधी कार्यों के लिए आवेदन करने वालों को बरेली पासपोर्ट कार्यालय के अधीन मुरादाबाद, अमरोहा, रामपुर पोस्ट ऑफिस पासपोर्ट सेवा केंद्र पर आवेदन को रिशेड्यूल कराने का सुझाव दिया है। ब्यूरो

पासपोर्ट बनवाने के लिए नहीं लाने होंगे प्रमाणपत्र, डिजिलॉकर से होंगे सत्यापित

अमर उजाला ब्यूरो

बरेली। अगर आपके शैक्षिक समेत अन्य जरूरी प्रमाणपत्र डिजिलॉकर में सेव हैं तो पासपोर्ट बनवाने के लिए मूल प्रमाणपत्र साथ लेकर आने की जरूरत नहीं है। सीधे डिजिलॉकर से ही दस्तावेज पासपोर्ट कार्यालय में जमा किए जा सकते हैं। यह जानकारी क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी मोहम्मद नसीम ने दी। बताया कि पेपरलेस वर्किंग के तहत यह नई व्यवस्था विदेश मंत्रालय ने शुरू कर दी है।

मोहम्मद नसीम के मुताबिक, विदेश मंत्रालय ने पासपोर्ट सेवा को डिजिलॉकर यानी डिजिटल लॉकर प्लेटफॉर्म से जोड़ दिया है। पासपोर्ट बनवाने के लिए आवेदक डिजिलॉकर के जरिए दस्तावेज जमा कर सकते हैं। इसके लिए ऑनलाइन आवेदन करते समय डिजिलॉकर का विकल्प आने पर आधार, पैनकार्ड समेत अन्य दस्तावेज डिजिलॉकर के जरिए खुद ही अपलोड हो जाएंगे। आवेदकों को मूल दस्तावेज साथ लाने की जरूरत नहीं है। क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय बरेली से जुड़े बरेली, पीलीभीत, शाहजहांपुर, बदायूं, मुरादाबाद, संभल, रामपुर, अमरोहा, बिजनौर, एटा, फिरोजाबाद, मैनपुरी, अलीगढ़ के आवेदकों को राहत मिलेगी।

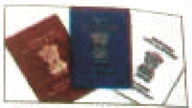

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय बरेली से जुड़े 13 जिलों के आवेदकों को होगा फायदा

वर्चुअल डिजिटल लॉकर में लोगों को शैक्षिक दस्तावेज, ड्राइविंग लाइसेंस, पैनकार्ड, आधार कार्ड, वोटर आईडी, लाइफ इंश्योरेंस पॉलिसी समेत कई प्रमाणपत्र स्टोर करने की सुविधा है। यहां जरूरी दस्तावेजों को डिजिटल प्लेटफॉर्म पर सुरक्षित रखा जा सकता है। डिजिलॉकर आधार कार्ड से लिंक होता है। लोगों को दस्तावेज साथ रखने की परेशानी से भी छुटकारा मिलेगा।

क्या है डिजिलॉकर : केंद्र सरकार के इलेक्ट्रॉनिक एंड टेक्नोलॉजी मिनिस्ट्री की ओर से डिजिटल लॉकर या डिजिलॉकर तैयार किया गया है। इसे अपना मोबाइल से ऑपरेट किया जाता है। इसमें अपने कागजात, प्रमाण पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस, पैन कार्ड आदि को स्टोर कर सकते हैं। इसके लिए संबंधित दस्तावेज की पूरी जानकारी विकल्प में देनी होगी। जिसे यह ऑटोमेटिक डिजिटल फॉर्म सेव कर लेगा। क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी के मुताबिक पासपोर्ट सेवा डिजिटल लॉकर से जुड़ने से प्रक्रिया और आसान हो गई है। इसके लिए आवेदकों को विदेश मंत्रालय की वेबसाइट पर लिंक करके डिजिलॉकर में संचित दस्तावेजों के सत्यापन के लिए स्वीकृति देनी होगी।

पासपोर्ट के आवेदनों पर समय से अपनी रिपोर्ट लगाए पुलिस

संवाद न्यूज एजेंसी

बरेली। पासपोर्ट के आवेदनों पर पुलिस की ओर से समय पर अपनी रिपोर्ट न देना बड़ी समस्या बन रही है। तमाम आवेदनों पर भ्रामक और अस्पष्ट रिपोर्ट दिए जाने से पासपोर्ट दफ्तर की मुश्किलें भी बढ़ गई हैं। इस समस्या का निदान ढूंढने के लिए पासपोर्ट अधिकारियों ने मंडलभर की 64 थानों के इंस्पेक्टरों के साथ बैठक की। उन्हें निर्देश दिया गया कि पासपोर्ट आवेदनों को लटकाने के बजाय समयबद्ध ढंग से जांच कर रिपोर्ट लगाई जाए।

पुलिस और पासपोर्ट अधिकारियों की संयुक्त बैठक पुलिस लाइन में मंगलवार को सुबह 11 बजे से दोपहर दो बजे तक चली। क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी मोहम्मद नसीम और उनके अधीनस्थ अधिकारियों ने पुलिस की ओर से पासपोर्ट के आवेदनों पर समयबद्ध ढंग से काम न करने में आ रही दिक्कतों का जिक्र करते हुए कहा कि इसकी वजह से पासपोर्ट आवेदकों को कहीं चक्कर काटने पड़ते हैं। उन्होंने कहा कि तमाम आवेदनों पर पुलिस कर्मी गैरजिम्मेदारी के साथ अस्पष्ट और भ्रामक रिपोर्ट दे देते हैं जिसकी वजह से आवेदन का निस्तारण करना मुश्किल हो जाता है। आवेदकों को भी यह भरोसा नहीं रहता कि उसे पासपोर्ट कभी नहीं जारी हो पा रहा है। क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी ने पुलिस इंस्पेक्टरों से सत्यापन प्रक्रिया में सुधार लाने को कहा। बैठक में सीओ दिलीप सिंह के साथ पासपोर्ट कार्यालय के दिनेश सिंह, अभिषेक सिंह, जोगेश्वर दयाल और दिनेश चंद्र मौजूद रहे।

कार्यशाला में बोलते पासपोर्ट अधिकारी। अमर उजाला

जोन के 64 थानों के इंस्पेक्टरों के साथ पासपोर्ट अफसरों की बैठक

भ्रामक व अस्पष्ट रिपोर्ट जारी करने का भी किया जिक्र, सुधार को कहा

पासपोर्ट कार्यशाला का हुआ आयोजन

बरेली। मंगलवार को पुलिस लाइन्स क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी मोहम्मद नसीम के नेतृत्व में पासपोर्ट कार्यालय की बरेली टीम ने पासपोर्ट सम्बन्धी पुलिस जांच प्रक्रिया पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। जिसमें सीओ प्रथम दिलीप सिंह समेत 64 थानों में पासपोर्ट का कार्य देख रहे पुलिसकर्मियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम के मुख्य वक्ता पासपोर्ट अधिकारी मोहम्मद नसीम पुलिस जांच प्रक्रिया में हुए सुधार और उनको लागू करने में आ रही कठिनाइयों का समाधान किया।

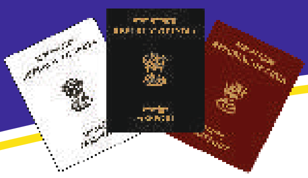

पासपोर्ट समाचार

हिन्दुस्

पासपोर्ट कार्यालय को मिला प्रथम पुरस्कार

बरेली। विश्व हिंदी दिवस पर विदेश मंत्रालय ने ऑनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया। राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए पासपोर्ट कार्यालय बरेली को प्रथम पुरस्कार दिया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विदेश राज्य मंत्री मीनाक्षी लेखी ने की। पासपोर्ट अधिकारी मोहम्मद नसीम ने सभी को बधाई दी। कार्यालय में 1 से 15 जनवरी तक स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया जा रहा है। वरिष्ठ अधीक्षक अतुल कुमार सक्सेना, दिनेश सिंह आदि ने भी पुरस्कार पर प्रसन्नता जताई।

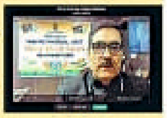

[redacted]

पांचाल पत्रिका का किया विमोचन

अमृत विचार, बरेली

एमजेपी रुहेलखंड विश्वविद्यालय में कुलपति कार्यालय के समिति कक्ष में कुलपति प्रो. केपी सिंह ने क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय बरेली की राजभाषा पत्रिका पांचाल के प्रथम अंक का विमोचन किया।

इस अवसर पर क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी मोहम्मद नसीम, दिनेश सिंह, धर्मवीर सिंह, मोहम्मद, आतिर अंसारी व मिथुन कुमार ने कुलपति को पुष्प गुच्छ और स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। पासपोर्ट कार्यालय की स्थापना (1983) के बाद यह पहला अवसर है जब कार्यालय द्वारा राजभाषा की पत्रिका का प्रकाशन करवाया गया। कुलपति ने क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी नसीम से पासपोर्ट अधिकारी से विश्वविद्यालय परिसर में शिविर लगाकर छात्रों के लिए अवेयरनेस प्रोग्राम करने की सलाह दी।

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय की पांचाल पुस्तिका का विमोचन करते कुलपति। ● अमृत विचार

कुलपति ने कहा कि पासपोर्ट कार्यालय एवं विश्वविद्यालय एक गठबंधन कर छात्रों के लिए पासपोर्ट कार्य को सुगम बना सकते हैं। कुलपति ने क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी को विश्वविद्यालय के डायरेक्टरेट ऑफ इंटरनेशनल रिलेशंस के समन्वयक प्रो. एसएस बेदी के साथ मिलकर छात्रों के हित में कार्य करने की प्रेरणा दी। इस मौके पर वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी जहीर अहमद, सुधाकर मौर्य, महेश चंद्र जोशी व तपन वर्मा भी मौजूद रहे।

पासपोर्ट कार्यालय में उमड़े आवेदक, लगी कतार

जागरण संवाददाता, बरेली : कोरोना संक्रमण का दौर शुरू होने के बाद पहले बंद रहे और बाद में आधी क्षमता से संचालित हो रहे पासपोर्ट कार्यालय की कार्य क्षमता पूरी होने के साथ ही वहां पर आवेदकों की भीड़ उमड़ने लगी है। गुरुवार को क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय में बड़ी संख्या में आवेदक पहुंचे, पासपोर्ट कार्यालय के अंदर भी आवेदकों की भीड़ होने के साथ ही सड़क तक लंबी लाइन लगी रही। कार्यालय से मिली जानकारी के मुताबिक गुरुवार दोपहर तक सात सौ से ज्यादा आवेदक आ चुके थे।

पीलीभीत रोड स्थित पासपोर्ट कार्यालय के बाहर लगी कतार। ● जागरण

विदेश यात्रा पर लंबे समय तक रहा था प्रतिबंध: कोरोना संक्रमण से विदेश यात्रा पर काफी समय तक प्रतिबंध लगा रहा। इसके बाद संक्रमण की दर कम हुई तो फिर से राहत मिल गई। ओमिक्रोन ने जोर पकड़ा तो विदेश जाने वाले लोग शांत होकर घरों में बैठ गए। अब तीसरी लहर का संक्रमण भी कम होने पर सरकार ने बुधवार से पूरी क्षमता के साथ कार्यालय खोलने के आदेश जारी किए थे। पीलीभीत रोड स्थित क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय में जिलों के आवेदक पहुंचने से भीड़ रही। सैनेटाइजेशन, मास्क व थर्मल स्क्रीनिंग करने के बाद प्रवेश दिया गया है।

कहीं से भी आवेदन करने की छूट से बढ़ी भीड़ : क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी ने बताया कि विदेश मंत्रालय ने सर्कुलर जारी किया है कि भारत का कोई भी नागरिक अपना पासपोर्ट कहीं से भी बनवा सकता है। इससे यहां आने वाले लोगों को यह सहूलियत मिल रही है। अब कोई भी व्यक्ति कहीं से भी आवेदन कर सकता है लेकिन पुलिस की इन्क्वायरी वर्तमान पते पर ही की जाएगी। अब क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी किसी भी जगह पुलिस इन्क्वायरी भेज सकता है। सर्कुलरी के जारी होने के बाद उत्तराखंड और लखीमपुर खीरी के लोग भी यहां से आवेदन कर रहे हैं।

" क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय में प्रतिदिन सामान्य में सात सौ पासपोर्ट के साथ ही तत्काल, पोस्ट आफिस का कोटा, पीएसके का मिलाकर एक हजार पासपोर्ट बनाने होते हैं। 16 जनवरी से उसी कोटे पर पहुंच गए हैं। शत-प्रतिशत कोटा हो गया तो भीड़ स्वाभाविक है। परेशानी ना हो, ध्यान रखा जा रहा है।- मोहम्मद नसीम, क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी, बरेली परिक्षेत्र

क्षेत्रीय कार्यालय के अंतर्गत आते ये जिले

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय बरेली के अंतर्गत बरेली के साथ ही शाहजहांपुर, पीलीभीत, बदायूं, मुरादाबाद, बिजनौर, अमरोहा, संभल, रामपुर, मैनपुरी, फिरोजाबाद, कासगंज और एटा हैं।

ये है पासपोर्ट आवेदन की प्रक्रिया

- सबसे पहले वेबसाइट पर जाकर आनलाइन आवेदन करना होगा। वहां पर 1500 रुपये फीस आनलाइन जमा करनी होगी। इसके बाद क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय में आने की तिथि के बारे में जानकारी मिल जाएगी।
- उस तिथि पर क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय पर आवेदक को आना होता है।
- कार्यालय में पहले काउंटर पर शैक्षिक प्रमाण पत्र, फोटो युक्त पहचान और निवास प्रमाण पत्र समेत अन्य प्रमाण पत्रों की जांच करने के बाद फोटो खिंचती है। साथ ही फिंगरप्रिंट और अन्य डिटेल चेक की जाती है। इसके बाद अंगूठे का निशान या फिर हस्ताक्षर कराए जाते हैं।
- दूसरे काउंटर पर इन सभी प्रमाण पत्रों की दोबारा जांच करने के साथ ही सारी डिटेल सत्यापित की जाती है। इसके बाद तीसरे काउंटर के लिए प्रमाण पत्र भेज दिए जाते हैं।
- तीसरे काउंटर पर पासपोर्ट के लिए आवेदन में कोई खामी थी तो नहीं। गुण एवं दोष के आधार पर आवेदन को स्वीकार या फिर अस्वीकार कर दिया जाता है।

पासपोर्ट दस्तावेजों की जांच को अब नहीं लगानी पड़ेगी लाइन, घर बैठे मिनटों में हो जाएगा काम : मोहम्मद नसीम

आवेदक अब डिजिलॉकर के माध्यम से जमा कर सकेंगे अपने दस्तावेज

सैदनगर/रामपुर (विधान केसरी)। पासपोर्ट आवेदकों को दस्तावेजों की जांच को अब लाइन नहीं लगानी पड़ेगी। घर बैठे ही मिनटों में काम हो जाएगा। विदेश मंत्रालय ने अब पासपोर्ट सेवा को डिजिटल लॉकर प्लेटफार्म से जोड़ दिया है।

क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी बरेली मोहम्मद नसीम ने बताया कि विदेश मंत्रालय ने पासपोर्ट बनाना और भी आसान कर दिया है अब पासपोर्ट सेवा को डिजिटल लॉकर प्लेटफार्म से जोड़ दिया है। डिजिटल लॉकर जिसे डिजिलॉकर भी कहा जाता है, यह एक तरह का वर्चुअल लॉकर होता है, जिसमें आप अपने जरूरी दस्तावेज जैसे शैक्षित प्रमाण पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस, पैन कार्ड, वोटर आईडी एवं आधार कार्ड डिजिटली स्टोर कर सकते हैं। उन्होंने बताया कि अब पासपोर्ट आवेदक डिजिलॉकर के माध्यम से अपने दस्तावेज जमा करा सकेंगे। पासपोर्ट अधिकारी मोहम्मद नसीम ने बताया कि पासपोर्ट आवेदकों को पासपोर्ट सेवा केंद्र में बायोमेट्रिक जांच के समय अब मूल दस्तावेज साथ ले जाने की अनिवार्यता नहीं है, क्योंकि अब डिजिलॉकर अकाउंट में अपने आवश्यक दस्तावेज अपलोड कर अपॉइंटमेंट के समय इन्हें डिजिटल रूप में दिखा सकते हैं किंतु ध्यान रहे कि डिजिलॉकर में दस्तावेजों का मात्र अपलोड होना पर्याप्त नहीं है। इसके लिए आवेदकों को आवेदन करते समय विदेश मंत्रालय की वेबसाइट www.passportindia.gov.in पर लिंक करके डिजीलॉकर में संरक्षित वांछित दस्तावेजों के सत्यापन हेतु स्वीकृति देना आवश्यक है।

पासपोर्ट बनवाने में स्लॉट की बाध्यता समाप्त

संवाद न्यूज एजेंसी

बिजनौर। पासपोर्ट बनवाने वालों के लिए एक अच्छी खबर है। अब पासपोर्ट बनवाने के लिए कितनी बार भी स्लॉट ले सकते हैं। विदेश मंत्रालय ने इसकी बाध्यता समाप्त कर दी है। इससे पूर्व एक वर्ष में अधिकतम तीन बार ही पासपोर्ट बनवाने के लिए आवेदन करने के बाद स्लॉट लिया जा सकता था। फिलहाल यह पाबंदी 31 दिसंबर तक के लिए हटाई गई है।

पासपोर्ट बनवाने के लिए ऑनलाइन आवेदन करने के बाद स्लॉट लेना होता है। इसके बाद आवेदक को निर्धारित तारीख और समय पर पासपोर्ट सेवा केंद्र पहुंचना होता है। वहां पर पासपोर्ट अधिकारी द्वारा आवेदक के अपलोड किए गए समस्त प्रमाण पत्रों की जांच की जाती है और फिर यह डाटा पुलिस सत्यापन के लिए पुलिस ऑफिस भेजा जाता है। वहां से फिर पासपोर्ट कार्यालय में डाटा वापस आता है।

इसके बाद बरेली क्षेत्रीय कार्यालय को डाटा ट्रांसफर किया जाता है। वहां से पासपोर्ट बनकर संबंधित आवेदक के पते पर पहुंच जाता है।

क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी मोहम्मद नसीम ने बताया कि कोरोना महामारी के दौरान या इससे पूर्व जिन लोगों ने पासपोर्ट बनवाने के लिए स्लॉट लिए और वे किसी कारण से निर्धारित तारीख या समय पर संबंधित पासपोर्ट कार्यालय नहीं पहुंच पाए थे। ऐसे लोगों को इसका अधिक फायदा होगा।

साल में तीन ही स्लॉट लेने का था नियम

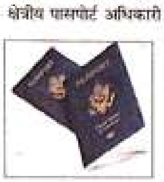

क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी मोहम्मद नसीम ने बताया कि कोरोना की दूसरी लहर से पहले पासपोर्ट बनवाने के लिए एक साल में अधिकतम तीन बार ही स्लॉट लिया जा सकता था। इससे पूर्व रिशेड्यूल करने की व्यवस्था नहीं थी। सरकार ने अब इसकी बाध्यता समाप्त कर दी है। उन्होंने बताया कि पासपोर्ट बनवाने के लिए 1500 रुपये फीस निर्धारित है, जबकि तत्काल में पासपोर्ट बनवाने की बिजनौर में व्यवस्था नहीं है। इसके लिए बरेली ही जाना पड़ता है और आवेदक को तीन हजार रुपये का ऑनलाइन ही भुगतान करना होता है।

अभी तक एक साल में अधिकतम तीन बार लिया जा सकता था स्लॉट

हिन्दी पखवाड़ा कार्यक्रम 2021 – पुरस्कार वितरण

''पांचाल'' प्रथम अंक विमोचन

विश्व हिन्दी दिवस कार्यक्रम

पासपोर्ट नियमों पर कार्यशाला

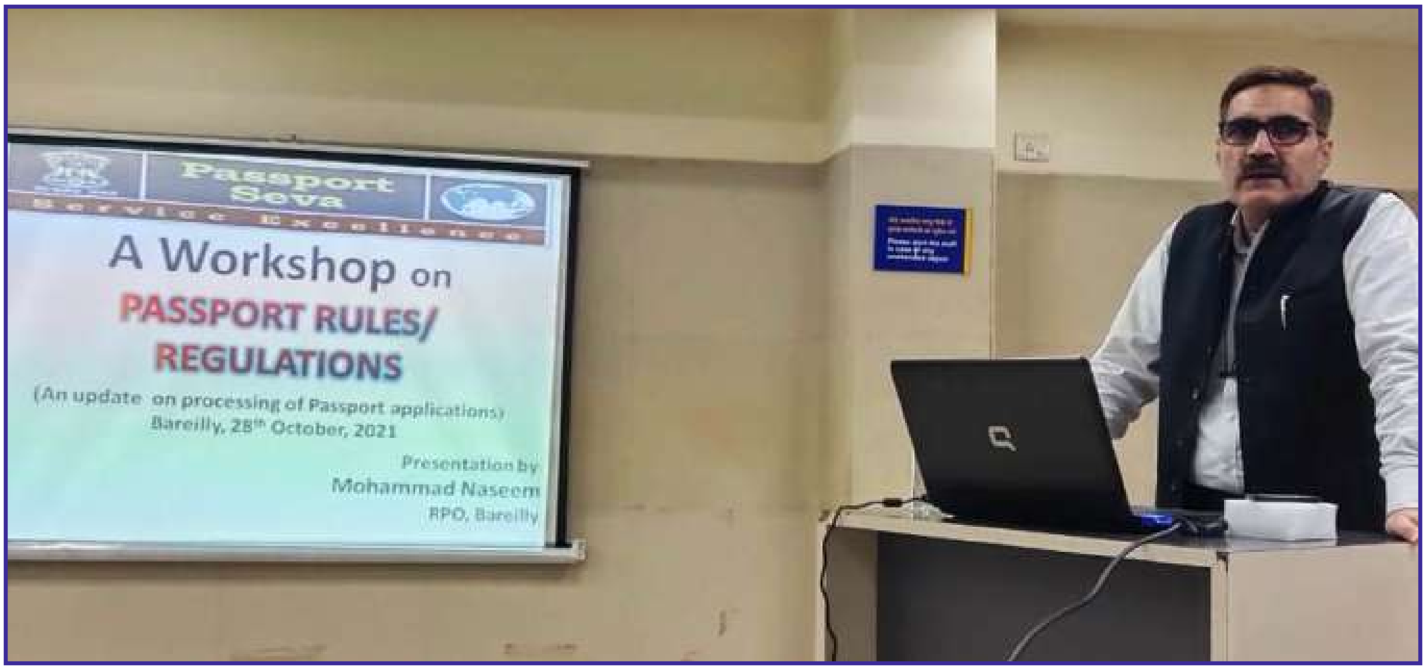

विश्व हिन्दी दिवस पर विदेश मंत्रालय का ऑनलाइन पुरस्कार वितरण समारोह

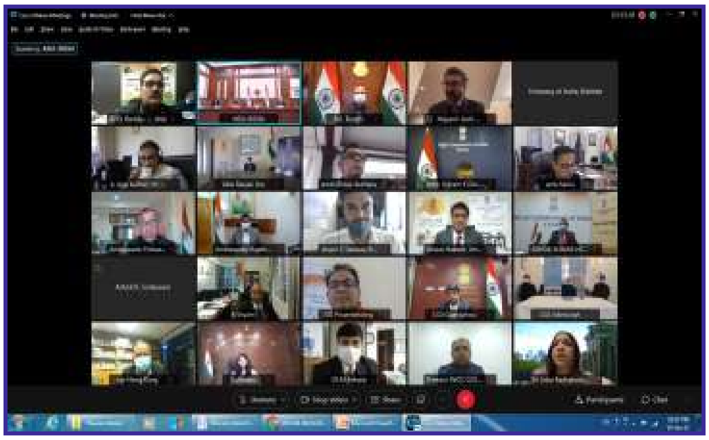

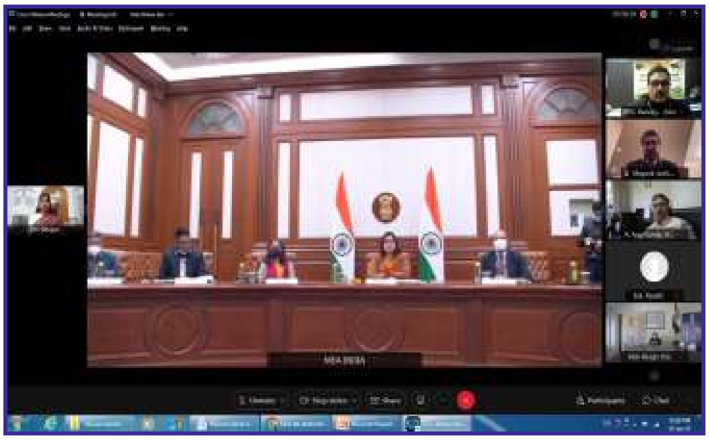

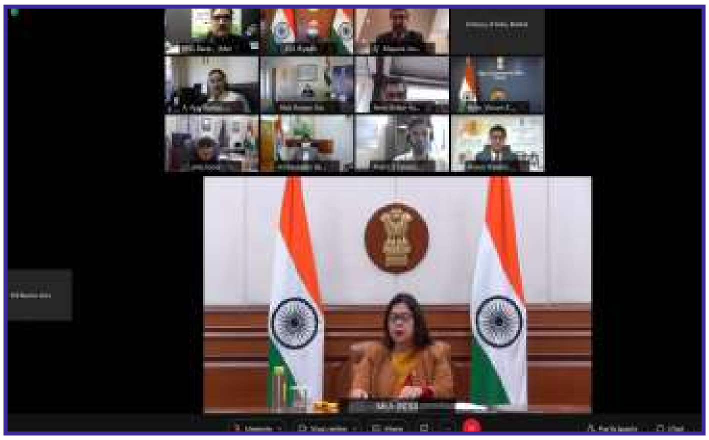

स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों पर निबंध प्रतियोगिता

देश की आज़ादी में हिन्दी का योगदान विषय पर कार्यशाला

आज़ादी का अमृत महोत्सव पर कार्यालय का प्रकाशमय भवन

आज़ादी का अमृत महोत्सव सप्ताह 21 से 27 फरवरी, 2022 के उपलक्ष्य में पदयात्रा